135वाँ संस्करण
जून 2026

मन की बात

रक्षा में आत्मनिर्भरता

सुरक्षित और समर्थ भारत

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का सन्देश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

34 **विश्व योगासन प्रतियोगिता :** भारत का शानदार प्रदर्शन

38 **जनभागीदारी से जन सुरक्षा :** पूरे समाज का सहारा बनी एक अनोखी पहल

42 **हरगिला आर्मी :** जन संरक्षण आंदोलन

50 **शास्त्रार्थ से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक :** भारत की ज्ञान विरासत का पुनर्जागरण

60 **ब्यावरा का 'इको-ब्रिक्स' मॉडल:** महिलाओं द्वारा एक स्थायी समाधान

संक्षेप में

20 **आत्मनिर्भरता की लहरों पर सवार भारत**

30 अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026

54 **ब्रह्मकमल डोमिनिकाना :** कैरिबियन में भारतीय वैदिक संस्कृति का एक सेतु

64 **इस गणेश उत्सव में 'वोकल फॉर लोकल'**

लेख

22 **भारत में निजी क्षेत्र में पहली सैन्य विमान असेम्बली लाइन का निर्माण** –बनमाली अग्रवाल

26 **भारत की लम्बी दूरी की सटीक प्रहार क्षमता को नई मज़बूती** –संजीव कुमार

46 **फुटबॉल के क्षेत्र में नगालैंड की कामयाबी** –ऐन्थनी न्गुली

56 **समय के साथ बढ़ता सेतु :** मेघालय के जीवित जड़ों से बने पुल की प्रेरक कहानी –हैली वार

67 **प्रतिक्रियाएँ**

मेरे प्यारे देशवासियो
नमस्कार

'मन की बात' में एक बार फिर आप सबसे जुड़कर मुझे अत्यंत आनंद हो रहा है। 2026 का आधा साल बीतने को है। इन 6 महीनों में हमने 'मन की बात' में देशवासियों की अनेक उपलब्धियों पर चर्चा की है। **जून में भी, देश ने कुछ ऐसी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जो हर देशवासी को गर्व से भर देती हैं। ये सफलताएँ देश की सुरक्षा और आत्मनिर्भरता से जुड़ी हैं। हाल ही में मुझे कोलकाता में नौ-सेना से जुड़े एक कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिला। वहाँ INS दूनागिरी, INS संशोधक और INS अग्रय को भारतीय नौ-सेना के बेड़े में शामिल किया गया। इन ships की design और manufacturing तक, सब कुछ स्वदेशी हैं।**

साथियो, जून के महीने में ही aviation sector में भी देश ने एक बड़ी सफलता पाई। C-295, ये विमान 'Made In India' है और C-295 विमान ने अपनी पहली उड़ान पूरी की है और ऐसे 40 विमान भारत में ही बनाए जा रहे हैं। इससे MSME और Aerospace sector को नई शक्ति मिल रही है। रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। और आत्मनिर्भर भारत का संकल्प भी मजबूत हो रहा है। इसी महीने DRDO ने स्वदेशी 'Long Range Land Attack Cruise

Missile' का भी सफल परीक्षण किया है। इसको DRDO की Laboratories और Indian Industries Partners ने मिलकर बनाया है, यानी आज समुद्र से लेकर आकाश तक हमारा भारत अधिक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बन रहा है।

साथियो, जून में एक और आयोजन हुआ जिसमें पूरी दुनिया भारत के प्रयासों से जुड़ी और ये कार्यक्रम था 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस'। इस बार दुनिया के 2500 से अधिक स्थानों पर योग के अनेक विविध कार्यक्रम हुए। हमारे देश में करोड़ों लोगों ने स्थान-स्थान पर योग कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इस महीने, अहमदाबाद में आयोजित 'विश्व योगासन चैम्पियनशिप' की भी बड़ी चर्चा हुई। इसमें भारत ने कुल 114 पदक जीते हैं, इनमें 102 गोल्ड मेडल भी शामिल हैं। भारत इस चैम्पियनशिप की पदक तालिका में पहले स्थान पर रहा। मैं सभी विजेता खिलाड़ियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियो, किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसके लोग होते हैं और जब उस देश के लोग कोई संकल्प लेते हैं तो कोई भी शक्ति उन्हें अपने लक्ष्य से डिगा नहीं पाती। राष्ट्र निर्माण में जन-भागीदारी की ये ताकत भारत की बहुत बड़ी पूंजी है और इस जन-भागीदारी का हम बार-बार अनुभव कर रहे हैं।

साथियो, पश्चिम एशिया में बनी युद्ध की स्थितियों को देखते हुए, मैंने देशवासियों से कुछ आग्रह किए थे। मैंने कहा था कि जहाँ तक सम्भव हो कुछ समय के लिए गोल्ड, सोना खरीदने से बचें। लोगों से कहा था कि विदेश में छुट्टियाँ मनाने से बचें, मैंने लोगों से car pooling को भी बढ़ावा देने की अपील की थी, मैंने किसानों से chemical मुक्त खेती के लिए, खेत बचाने के लिए और

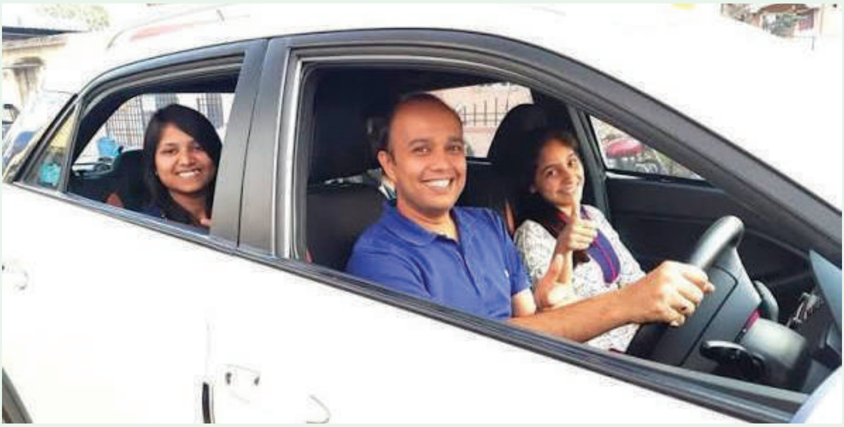

प्राकृतिक खाद का ज्यादा-से-ज्यादा इस्तेमाल का आग्रह किया था। साथियो, मैं देश के हर नागरिक का आभारी हूँ कि मेरी अपील का उन्होंने ना सिर्फ समर्थन किया बल्कि हर तरफ से उसमें अपना सहयोग कर रहे हैं। मुझे कई परिवारों ने संदेश भेजकर अपने अनुभव साझा किए हैं। कितने ही परिवारों ने तय किया है कि घर के विवाह में इस बार सोना नहीं खरीदेंगे। जरूरत पड़ी तो पुराने सोने को recycle करके नए गहने बना लेंगे। कितने ही लोगों ने social media पर ये भी लिखा है कि कैसे उन्होंने इस बार विदेश यात्रा को टाल दिया है।

साथियो, Car pooling को लेकर भी लोगों ने अनेक अनुभव साझा किए हैं। जो लोग हर दिन एक ही दिशा में अपने-अपने वाहनों से जाते थे, वे अब साथ जाने लगे हैं। लोग हर सम्भव बस और मेट्रो का उपयोग कर रहे हैं। इससे पेट्रोल और डीजल की बचत हो रही है। इसी तरह देश के अलग-अलग हिस्सों में प्राकृतिक खाद की खपत बढ़ने की भी खबरें आ रही हैं। साथियो, मुझे इस बात की खुशी है, इस global crisis का हम भारतीय मिलकर मुकाबला कर रहे हैं। मुझे विश्वास है जनभागीदारी की यही शक्ति हमें मजबूती देगी, हमें सफल बनाएगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश में जन्मदिन, शादी-ब्याह पारिवारिक कार्यक्रम होने के ही साथ ही पूरे समाज का भी उत्सव होता है। हर परिवार चाहता है कि उसकी खुशियाँ दूसरों के साथ भी साझा हों। लोग मेहमानों को उपहार भी देते हैं। साथियो, महाराष्ट्र के नांदेड़ में एक परिवार ने अपनी खुशियाँ बाँटने के लिए ऐसा काम किया है जो चर्चा का विषय

बन गया है। यहाँ नांदेड़ के बहादुरपुरा गाँव में पेठकर परिवार रहता है। इस परिवार ने सोचा कि अगर खुशी बाँटनी ही है, तो ऐसी चीज दी जाए, जो मुश्किल समय में किसी परिवार का सहारा बने। अपने घर में विवाह के अवसर पर इस परिवार ने गाँव के लगभग साढ़े तीन हजार लोगों के लिए दुर्घटना बीमा की व्यवस्था की। हर व्यक्ति को एक लाख रुपए का बीमा कवर दिया गया। इस पहल के पीछे की भावना बहुत स्पर्श करने वाली है। परिवार ने देखा था कि दुर्घटना के बाद परिवारों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में एक छोटी-सी सहायता भी बहुत बड़ा सम्बल बन जाती है।

साथियो, सरकार देश के करोड़ों परिवारों तक सुरक्षा का कवच पहुँचा रही है। 'प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना' के तहत केवल 20 रुपये के सालाना premium यानि केवल एक साल के 20 रुपये का premium, उस पर दो लाख रुपये तक का 'दुर्घटना बीमा' मिलता है। अब तक इस योजना से 58 करोड़ से अधिक लोग जुड़ चुके हैं। इनमें करीब 28 करोड़ हमारी माताएँ, बहनें, बेटियाँ हैं, महिलाएँ हैं। इस योजना से पीड़ित परिवारों को अब तक जो हिसाब मिला है 3,700 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता मिल चुकी है।

साथियो उसी प्रकार से 'प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना' भी उतनी ही अहम है। ये योजना व्यक्ति की दुखद मृत्यु होने पर उसके परिवार को दो लाख रुपये का बीमा कवर देती है। इसका वार्षिक premium सिर्फ 436 रुपये है। मतलब एक दिन का मुश्किल से डेढ़ रुपया। इस योजना से अब तक 27 करोड़ से अधिक लोग जुड़े हैं। इसके तहत देश के करीब 11 लाख परिवारों को

करीब 22 हजार करोड़ रुपये की सहायता मिल चुकी है। ये आकड़ें बहुत बड़े हैं। इन आकड़ों के पीछे लाखों परिवारों की अपनी-अपनी कहानी है। कहीं किसी माँ को बच्चों की पढ़ाई जारी रखने में सहायता मिल गई, कहीं किसी पत्नी को घर की जिम्मेदारियाँ संभालने का सहारा मिल गया। साथियो, कई बार बहुत बड़ी सुरक्षा की शुरुआत बहुत छोटी राशि और एक छोटे-से कदम से हो सकती है, छोटा-सा भी निर्णय बहुत बड़ा बदलाव करता है। मेरा आप सभी से आग्रह है कि अपने परिवार में इन योजनाओं की जानकारी जरूर साझा करें।

मेरे प्यारे देशवासियो 'मन की बात' में अब बात एक ऐसे विषय की जो हजारों साल पुराना है, हजारों साल से मानव समाज में घर कर करके बैठ गया है। ये विषय है – अंधविश्वास का। अंधविश्वास कई बार केवल एक गलत धारणा नहीं होता। वो डर पैदा करता है और जब डर मन पर हावी हो जाता है, तो इंसान सच को देखना ही बंद कर देता है। अंधविश्वास में डूबे लोग, फिर बिना तर्क के, बिना सत्य जाने, ऐसे फैसले लेने लगते हैं, जिनका बड़ा नुकसान होता है। वहीं समाज में ऐसे लोग भी होते हैं जो विज्ञान, अनुभव और तर्क के आधार पर उन धारणाओं को चुनौती देते हैं। अंधविश्वास से विश्वास तक की ये यात्रा आसान नहीं होती और आज मैं ऐसी ही एक सफल यात्रा के बारे में आपको जरूर बताना चाहता हूँ।

साथियो, असम में एक पक्षी पाया जाता है। उस पक्षी का नाम है 'हरगिला'। 'हरगिला' एक दुर्लभ पक्षी है। ये प्रकृति को स्वच्छ रखने में अहम भूमिका निभाता है। लेकिन असम के कुछ इलाकों में लम्बे समय तक इसे अशुभ माना जाता था। लोग इसे अपने आसपास देखना पसंद नहीं करते थे। कई

बार उन पेड़ों को भी काट दिया जाता था जिन पर हरगिला के घोसलें बने होते थे। सोचिए, एक ऐसा पक्षी जो पर्यावरण की सफाई में मदद करता है, वही 'हरगिला' लोगों के डर का शिकार बन गया था। इसी दौरान जीव-वैज्ञानिक पूर्णिमा देवी बर्मन ने ये सब देखा। उन्होंने लोगों के मन में बैठी गलत धारणा को बदलने का संकल्प लिया। उन्होंने महिलाओं से बात की, उन्होंने लोगों को विज्ञान के आधार पर समझाया, धीरे-धीरे महिलाएँ इस अभियान से जुडने लगीं। फिर एक बड़ा बदलाव शुरू हुआ। जिस पक्षी को कभी अशुभ मानकर भगाया जाता था, वही गाँवों की पहचान बनने लगा। हजारों ग्रामीण महिलाएँ 'हरगिला' को बचाने के लिए आगे आईं - आज उन्हें 'हरगिला आर्मी' के नाम से जाना जाता है। इन महिलाओं ने समाज के साथ संघर्ष भी किया। समाज को समझाने के लिए दिन-रात काम किया और अंधविश्वास को पीछे छोड़ करके रहे। उन्होंने दिखाया है जब सही जानकारी पहुँचाई जाती है, तो वर्षों पुरानी सोच भी बदल सकती है।

साथियो, मैं अक्सर कहता हूँ, जो खेलता है, वो खिलता है। आज देश में ऐसे युवाओं की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, जो खेल भी रहे हैं और खिल भी रहे हैं। पहले की तुलना में अब कहीं अधिक युवा खेलों को career के रूप में अपना रहे हैं। **मुझे नागालैंड के दो ऐसे प्रयासों के बारे में जानकारी मिली है, जो बहुत दिलचस्प हैं। पहला प्रयास है 'Nagaland Baby League'.** नाम सुनकर आपको जरूर लगता होगा ये बहुत छोटे बच्चों की कोई साधारण लीग होगी, लेकिन ऐसा नहीं है। ये 5 से 10-12 साल की आयु के छोटे-छोटे बच्चे, फूल जैसे

बच्चों की एक असाधारण league है और इन बच्चों के football खिलाड़ियों की एक ऐसी league है, जो उनकी रफ्तार को और प्रतिभा के लिए उनको प्रेरित भी करती है और उनकी पहचान भी बनाती है। इसकी शुरुआत नागालैंड के अधिक-से-अधिक बच्चों को football से जोड़ने के लिए हुई थी। पांच से बारह वर्ष तक के लड़के और लड़कियाँ इसमें हिस्सा ले सकते हैं। ये league अब अपने तीन वर्ष पूरे कर चुकी है। इस लीग का बच्चों के मन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है।

साथियो, नागालैंड में एक और अच्छा प्रयास हो रहा है। इसका नाम है, 'Nagaland Women Futsal League', हो सकता है आपके लिए ये 'futsal' एक नया नाम होगा, मैं आपको बताता हूँ Futsal को indoor football भी कहा जाता है। इसमें एक टीम में केवल पाँच खिलाड़ी होते हैं। खेल का मैदान भी football के मैदान से बहुत छोटा होता है। इस कारण खिलाड़ियों को तेज फैसले लेने होते हैं। उन्हें अपनी technique और skill का बेहतर इस्तेमाल करना पड़ता है। नागालैंड की Women Futsal League हमारी बेटियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अच्छा अवसर दे रही है। मैं ऐसी पहलों के लिए नागालैंड के लोगों की सराहना करता हूँ। ऐसे प्रयास देश के दूसरे हिस्सों को भी प्रेरणा देते हैं।

साथियो, ये technology का युग है। हर दिन नई research हो रही है। नए-नए AI innovations सामने आ रहे हैं। इस दौर में एक सवाल बहुत महत्त्वपूर्ण है - लोगों की creativity को कैसे बचाए रखा जाए? नई technology के साथ आगे बढ़ते हुए हम अपनी जड़ों से कैसे जुड़े रहें? इन सवालों का समाधान खोजा है 'नालंदा विश्वविद्यालय' ने। हजारों

साल पुरानी हमारी नालंदा विश्वविद्यालय अब नए अवतार के रूप में भारत का भाग्य गढ़ रही है। दो साल पहले मुझे नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर के लोकार्पण का अवसर मिला था । नालंदा विश्वविद्यालय ने शास्त्रार्थ की हमारी प्राचीन परम्परा को फिर से जीवंत किया है। शास्त्रार्थ केवल अपनी बात रखने का माध्यम नहीं है। ये वाद–संवाद और मंथन की एक अनुशासित प्रक्रिया है। इसमें तर्क के साथ, तथ्य के साथ, अपनी बात कहना बहुत जरूरी होता है, और उसमें आपकी महारत होनी चाहिए। दूसरों के विचारों को धैर्य से सुनने और समझने की सीख भी इस शास्त्रार्थ की प्रक्रिया से मिलती है। मुझे खुशी है कि नालंदा विश्वविद्यालय ने इसे अपने दीक्षांत समारोह का हिस्सा बनाया। इसमें भाग लेने वाले करीब आधे students अन्य देशों से आए थे। एक प्राचीन परम्परा को आज के समय से जोड़ने का ये प्रयास बहुत सराहनीय है। मैं इसके लिए नालंदा विश्वविद्यालय को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मैं देश के दूसरे विश्वविद्यालयों से भी आग्रह करूंगा कि वे ऐसी पहल पर विचार करें।

साथियो, जड़ों से जुड़े रहकर युवाओं को नई technology के लिए तैयार करने का एक और अच्छा प्रयास हो रहा है। दिल्ली में स्थित Central Sanskrit University, Artificial Intelligence और Data Science में B.tech Programme शुरू करने जा रही है। ये आधुनिक technology को भारत के पारम्परिक ज्ञान से जोड़ने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इससे भारतीय भाषाओं के लिए नए AI tools तैयार करने में मदद मिलेगी। हमारे प्राचीन ग्रंथों और पांडुलिपियों को digital रूप में संरक्षित करने के काम को भी नई गति मिलेगी। मैं Central Sanskrit

University को इस प्रयास के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ ।

साथियो, आज भारतीय संस्कृति दुनिया के अलग-अलग हिस्सों तक पहुँच रही है। हमारे गीत, संगीत और आध्यात्म को दुनिया-भर के लोग जान रहे हैं और अपना रहे हैं। भारत से हजारों kilometre दूर Caribbean सागर में Dominican Republic नाम का एक देश है। वहाँ भारतीयों की संख्या करीब 100 है शायद इससे भी कम होगी। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति और आध्यात्म से जुड़ा एक बहुत अच्छा प्रयास वहाँ हो रहा है। वहाँ Spanish बोलने वाले कुछ लोगों ने एक team बनाई है। इस team का नाम है, 'ब्रहमकमल डोमिनिकाना'। team के सदस्य मिलकर वैदिक साहित्य का अध्ययन करते हैं। वे वैदिक मंत्रों का उच्चारण भी सीख रहे हैं। उन्हें इसकी कोई formal training नहीं मिली है। लेकिन उन्होंने audio recordings सुनकर वैदिक मंत्रों का सही उच्चारण सीखा है। आज वे कई मंत्रों का बहुत अच्छे से जाप कर लेते हैं। इनमें पुरुष सूक्तम, श्री सूक्तम, श्री रुद्रम, दुर्गा सूक्तम और देवी महात्मयम शामिल हैं। भारत से इतनी दूर रहकर हमारी परम्पराओं को सीखने का उनका यह प्रयास बहुत प्रेरक है। मैं 'ब्रहमकमल डोमिनिकाना' वहाँ के सभी सदस्यों को उनके प्रयासों के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं ऐसे सभी लोगों की ह्रदय से सराहना करता हूँ जो भारतीय संस्कृति को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, मेघालय की पहचान बादलों से है, खूबसूरत नजारों से है। जो मेघालय जाता है, उसे वहाँ के लोगों का अपनापन भी लम्बे समय तक याद रहता है। लेकिन, मेघालय की एक और विशेषता है जिसकी मैं आज, 'मन की बात' में आपसे चर्चा करना चाहता हूँ। ये है - मेघालय के रूट ब्रिज। रास्ता

वाला route नहीं, जड़ों वाला root। इन रूट ब्रिजों की कहानी बहुत रोचक है। ये ब्रिज कुछ दिनों या कुछ वर्षों में नहीं बनते। इन्हें तैयार होने में कई दशक लगते हैं। रबर के पेड़ों की जड़ों को धीरे-धीरे दिशा दी जाती है। इन जड़ों को जल-धाराओं के पार ले जाया जाता है। समय के साथ वही जड़ें एक मजबूत ब्रिज का रूप ले लेती हैं। इन ब्रिजों की एक और विशेषता है। ये जीवित ब्रिज हैं। समय बीतने के साथ ये और मजबूत हो जाते हैं। इनमें मेघालय के लोगों की सृजनशीलता दिखाई देती है। इनके पीछे वर्षों का धैर्य और प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान है। ये ब्रिज बताते हैं कि मनुष्य प्रकृति के साथ मिलकर कितनी अद्‌भुत चीजें बना सकता है। ये हमारे देश की, इस धरती की, धरोहर है। अब भारत ने मेघालय के रूट ब्रिजों को UNESCO World Heritage Site Network में शामिल कराने के लिए आवेदन किया है।

साथियो, climate change के कारण इन रूट ब्रिजों के सामने कई चुनौतियाँ भी आती हैं। ऐसे समय में मेघालय के लोगों ने इस प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाई है। पहले ये पता लगाना भी आसान नहीं था कि ऐसे ब्रिजों की संख्या कितनी है? स्थानीय लोगों ने खुद इनकी गिनती शुरू की। इसके बाद समुदायों ने इन ब्रिजों की देख-भाल की जिम्मेदारी भी संभाली। आज स्थानीय लोग 120 से अधिक रूट ब्रिजों की देख-रेख कर रहे हैं। कुछ टीमें हर साल इन पुलों की स्थिति की जाँच करती हैं। कुछ लोगों ने आस-पास के क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए नर्सरी भी तैयार की है। इस तरह के इनके संरक्षण

के लिए एक पूरा ecosystem तैयार हो गया है। आपने देखा होगा, इस वर्ष हैली वार जी को Padma Award से सम्मानित किया गया है। उन्होंने अपने जीवन के 50 से अधिक वर्ष इन रूट ब्रिजों की देखभाल में लगाए हैं। उनका समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणादायक है| साथियो, आपने कभी इन रूट ब्रिजों की यात्रा की हो, तो उनकी तस्वीरें social media पर जरूर साझा कीजिए। आपकी तस्वीरें दूसरे लोगों को भी मेघालय की इस अनोखी धरोहर के बारे में जानने के लिए प्रेरित करेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, हम सभी चाहते हैं कि हमारा गाँव साफ-सुथरा हो, हमारा शहर सुंदर दिखे। लेकिन शायद ही कभी रुककर ये सोचा जाता है कि हमारे आस-पास जो कचरा जमा होता है, कौन उसे साफ करता है? ज्यादातर लोग तो यही मानकर चलते हैं कि ये किसी और की जिम्मेदारी है और वो ही सफाई करेगा। लेकिन हमारे बीच कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो अपनी सोच से हमें बहुत प्रेरित करते हैं। मुझे मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के ब्यावरा की कुछ बहनों के बारे में जानने का अवसर मिला। उन्होंने अपने आस-पास फैले plastic कचरे को हटाने का संकल्प लिया। ये नहीं सोचा कि कोई आकर बदलाव लाएगा। उन्होंने खुद शहर-भर से plastic कचरा और खाली बोतलें इकट्ठा करना शुरू किया। धीरे-धीरे ये प्रयास आगे बढ़ता गया और फिर उस plastic को eco-bricks में बदला जाने लगा। आज इन्हीं eco-bricks का उपयोग सार्वजनिक स्थानों को सुंदर बनाने में किया जा रहा है। राजगढ़ में पिछले कुछ महीनों में सैकड़ों किलो plastic को recycle करके उनका

छोटे कदम, बड़ा बदलाव

ब्यावरा की महिलाओं की पहल

बेहतर उपयोग किया गया है। यानी, जो plastic पहले शहर में प्रदूषण फैलाता था, आज वही इन बहनों के प्रयास से शहर की सुंदरता बढ़ाने में योगदान दे रहा है। मैं ब्यावरा की सभी बहनों और इस अभियान से जुड़े साथियो को बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, मुझे कई लोगों ने पत्र लिखकर एक खास विषय पर बात करने का सुझाव भेजा है। ये विषय 'गणेश उत्सव' से जुड़ा है। वैसे तो 'गणेश उत्सव' में अभी काफी समय बाकी है, लेकिन लोगों ने ये आग्रह किया है कि इस विषय पर अभी ही बात होनी चाहिए। दरअसल, गणेश जी की मूर्तियाँ बनाने का काम बहुत पहले शुरू हो जाता है। मूर्ति बनाने वाले, मूर्तियों के व्यापार से जुड़े लोग अभी से सक्रिय हो जाते हैं। इसलिए मेरा आप सभी से एक आग्रह है। आप प्रयास करें कि आपके घर, सोसायटी या आसपास की जगहों पर गणपति बप्पा की जो मूर्ति स्थापित हो, वो हमारे देश की मिट्टी से बनी हो, वो हमारे अपने कुम्हारों और स्थानीय कलाकारों के हाथों तैयार हुई हो। जो लोग गणेश जी की मूर्तियाँ बनाते हैं, उनसे भी मेरा आग्रह है कि वे मिट्टी की मूर्तियों को प्राथमिकता दें, और जो लोग मूर्तियाँ खरीदते हैं, वे भी यह जरूर देखें कि गणपति बप्पा की मूर्ति किससे बनी है और किस देश में तैयार हुई है। Plaster of Paris से बनी मूर्तियाँ बिल्कुल ना खरीदें। साथियो, मिट्टी की मूर्तियाँ पूजा के बाद सहज रूप से पानी में विलीन हो जाती हैं। इससे हमारी नदियाँ, तालाबों और पर्यावरण की रक्षा होती है। हमारी आस्था भी बनी रहती है और प्रकृति के प्रति हमारा दायित्व भी पूरा होता है। जब हम स्थानीय कारीगरों से मूर्ति खरीदते हैं, हम 'Vocal for Local' के संकल्प को मजबूत करते हैं। मुझे विश्वास है

कि इस बार 'गणेश उत्सव' में और ऐसे हर उत्सव में हम ऐसी सारी बातों पर जरूर गम्भीरता से सोचेंगे और देश-हित में कदम भी उठाएँगें।

साथियो, हमारे देश की सबसे बड़ी शक्ति, हमारे देश के लोग हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में हो रहे छोटे-बड़े प्रयास हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। ये प्रयास बताते हैं कि जब मन में संकल्प हो और समाज का साथ मिले, तो कोई भी बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। आप अपने आस-पास हो रहे ऐसे प्रयासों के बारे में मुझे जरूर लिखते रहिए। अपने विचार और अपने सुझाव भेजते रहिए, हो सकता है आपके आस-पास की कोई छोटी-सी पहल, पूरे देश के लिए प्रेरणा बन जाए।

अगले महीने हम फिर मिलेंगे। देशवासियों के कुछ नए प्रयासों की चर्चा करेंगे। तब तक आप अपना और अपने परिवार का ध्यान रखिए, और हाँ! जलसंचय तो करना-ही-करना है। बारिश के पानी की एक-एक बूँद को हमें बचाना है। 'Catch the Rain' ये अभियान जरा भी ढ़ीला नहीं होने देना है। तो मेरा खास आग्रह है, वर्षा का बूँद-बूँद पानी, हम मिल करके बचायें।

बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

आत्मनिर्भरता की लहरों पर सवार भारत

समुद्र से लेकर आकाश तक भारत आज सुरक्षा और आत्मनिर्भरता के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। रक्षा क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' का संकल्प अब धरातल पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में देश की इस बढ़ती ताक़त का गर्व के साथ उल्लेख किया। इसी दिशा में क़दम बढ़ाते हुए कोलकाता के श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंदरगाह पर एक ऐतिहासिक समारोह में तीन स्वदेशी युद्धपोतों- **INS** दूनागिरी, **INS** संशोधक और **INS** अग्रय को भारतीय नौसेना के बेड़े में शामिल किया गया। इन तीनों युद्धपोतों की डिज़ाइनिंग नौसेना के 'वॉरशिप डिज़ाइन ब्यूरो' ने की है और इनका निर्माण कोलकाता के 'गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स' द्वारा किया गया है। तीन भिन्न क्षमताओं वाले ये युद्धपोत समुद्री सुरक्षा और रक्षा निर्माण में भारत की आत्मनिर्भरता के अभेद्य प्रतीक हैं।

नौसेना की नई ताक़त

INS दूनागिरी

यह 'प्रोजेक्ट 17A' के तहत निर्मित एक शक्तिशाली 'स्टेल्थ गाइडेड-मिसाइल फ्रिगेट' है। इस युद्धपोत को विशेष रूप से रडार की पकड़ से बचने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे इसे ढूंढ पाना मुश्किल हो जाता है। INS दूनागिरी सतह से सतह पर मार करने वाली 'ब्रह्मोस' मिसाइलों और 'मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल' प्रणाली जैसे उन्नत हथियारों और अत्याधुनिक सेंसरों से पूरी तरह लैस है।

INS संशोधक

अन्य युद्धपोतों से अलग इसका मुख्य कार्य समुद्र तल का सटीक मानचित्रण (Mapping) करना है। इसे तटीय और गहरे पानी के 'हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण' के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है। यह पोत ऐसा डेटा एकत्र करता है जो सुरक्षित नेविगेशन और नौसैनिक अभियानों में मदद करता है। अत्यधिक गहराई (जहाँ गोताखोर नहीं पहुँच सकते) में सर्वेक्षण करने के लिए यह अपने साथ 'ऑटोनॉमस अंडरवाटर व्हीकल्स' और 'रिमोटली ऑपरेटेड व्हीकल्स' जैसी मानव रहित मशीनें लेकर चलता है।

INS अग्रय

यह पोत मुख्य रूप से भारत की तटरेखा के क़रीब काम करने वाली दुश्मन देशों की पनडुब्बियों का शिकार करने के लिए बनाया गया है। यह एक 'एंटी-सबमरीन वॉरफेयर शैलो वॉटरक्राफ्ट' है जो तट के पास किसी भी पानी के भीतर के ख़तरे का पता लगाने, उसे ट्रैक करने और नष्ट करने में सक्षम है। यह हल्के टॉरपीडो, स्वदेशी रॉकेट लॉन्चर और शैलो वॉटर सोनार सिस्टम से लैस है। इसमें पारम्परिक प्रोपेलर के बजाय 'वाटर जेट प्रोपल्शन सिस्टम' का उपयोग किया गया है, जो पानी के भीतर के शोर को कम करके पनडुब्बी रोधी अभियानों में इसे एक बड़ी बढ़त देता है।

बनमाली अग्रवाल

चेयरमैन

टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड

भारत में निजी क्षेत्र में पहली सैन्य विमान असेम्बली लाइन का निर्माण

भारत में टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स का, पहले सी-295 परिवहन विमान का निर्माण, देश की एयरोस्पेस यात्रा में एक मील का पत्थर है। भारत में निजी क्षेत्र के किसी उद्योग में पहली बार सैन्य विमान निर्माण की क्षमता का उदय हुआ है जो अब केंद्रीय रक्षा मंत्रालय और भारतीय वायु सेना के लिए देश में ही अत्याधुनिक सैन्य विमानों का निर्माण कर रहा है।

रक्षा विनिर्माण के क्षेत्र में सी-295 कार्यक्रम, 'आत्मनिर्भर भारत' की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। वर्ष 2021 में रक्षा मंत्रालय और स्पेन की एयरबस डिफ़ेंस एंड स्पेस के बीच हुए अनुबंध के तहत भारतीय वायु सेना को कुल 56 सी-295 परिवहन विमान मिलेंगे। इनमें से पहले 16 विमान पूरी तरह स्पेन में बने मिल चुके हैं, लेकिन शेष 40 विमानों का निर्माण एयरबस के सहयोग से भारत में टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स कर रहा है। इसमें पुर्ज़ों के निर्माण से लेकर अंतिम असेम्बली और परीक्षण तक की सारी प्रक्रिया भारत में ही पूरी की जा रही है।

भारत में सैन्य विमानों के लिए सी-295 कार्यक्रम के तहत निजी क्षेत्र में पहली फाइनल असेम्बली लाइन बनाई गई है। यह उपलब्धि न केवल टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स के लिए बल्कि देश की विकसित होती एयरोस्पेस विनिर्माण क्षमता के लिए भी एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। एक आधुनिक सैन्य विमान का निर्माण केवल हज़ारों पुर्जे जोड़ने तक सीमित नहीं होता। इसके लिए उच्च स्तरीय सटीक इंजीनियरिंग, कड़ा गुणवत्ता आश्वासन, उन्नत विनिर्माण प्रक्रियाओं तथा डिज़ाइन, उत्पादन और अंतिम असेम्बली के बीच निर्बाध समन्वय की आवश्यकता होती है। सी-295 कार्यक्रम के तहत इन सभी क्षमताओं का विकास और क्रियान्वयन भारत में ही किया जा रहा है। इससे एक ऐसा मज़बूत आधार तैयार हो रहा है जो आने वाले दशकों तक देश की एयरोस्पेस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और वैश्विक महत्त्वाकांक्षाओं को मज़बूती देगा।

फिर भी, सी–295 कार्यक्रम का महत्त्व केवल फाइनल असेम्बली लाइन बनाने तक सीमित नहीं है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि उस मज़बूत औद्योगिक तंत्र की स्थापना है जिसे विकसित करने में यह सहायक है। इस पहल के माध्यम से भारतीय उद्योग, बड़े विनिर्माता, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) तथा प्रौद्योगिकी साझेदारों को साथ लेकर एक सशक्त एयरोस्पेस मूल्य शृंखला (Aerospace Value Chain) का निर्माण किया जा रहा है।

भारतीय उद्योग की व्यापक और गहन भागीदारी इस कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता है। भारत में बनाए जा रहे 40 सी–295 विमानों के लिए 85 प्रतिशत से अधिक संरचनात्मक कार्य तथा अंतिम असेम्बली सम्बंधी कार्य देश में ही हो रहे हैं। इसके साथ ही, विमान निर्माण में उपयोग होने वाले लगभग 13,000 सूक्ष्म पुर्जों (डिटेल पार्ट्स) का निर्माण भी भारत में ही किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत विनिर्माण की 21 विशेष प्रक्रियाएँ प्रमाणित की गई हैं तथा सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के 40 से अधिक भारतीय आपूर्तिकर्ताओं (सप्लायर्स) को इससे जोड़ा गया है। ऐसा करने से देश में एक मज़बूत और आत्मनिर्भर एयरोस्पेस आपूर्ति शृंखला (सप्लाई चेन) विकसित हुई है। आपूर्तिकर्ताओं का यह नेटवर्क अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि विमानन क्षेत्र में किसी देश की वास्तविक क्षमता केवल एक अंतिम असेम्बली संयंत्र से नहीं बनती, बल्कि सैकड़ों विनिर्माण प्रक्रियाओं, पुर्ज़ों, उपकरणों, गुणवत्ता प्रणालियों और प्रशिक्षित औद्योगिक इकाइयों के समन्वित योगदान से विकसित होती है। आज भारतीय कम्पनियाँ सी–295 विमान के लिए हज़ारों पुर्ज़ों और उप–असेम्बलियों (सब–असेम्बलीज़) का निर्माण कर रही हैं, जबकि लगातार विस्तारित हो रहा भारतीय आपूर्तिकर्ता नेटवर्क उत्पादन के प्रत्येक चरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा

है। इस प्रकार ये उद्यम न केवल भारत की औद्योगिक क्षमता सुदृढ़ कर रहे हैं, बल्कि अपने को वैश्विक एयरोस्पेस मूल्य शृंखला (ग्लोबल एयरोस्पेस वैल्यू चेन) में एक महत्त्वपूर्ण भागीदार के रूप में भी स्थापित कर रहे हैं।

यह कार्यक्रम मानव संसाधन के विकास की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इंजीनियरिंग, विनिर्माण, गुणवत्ता आश्वासन तथा आपूर्ति शृंखला प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में यह एयरोस्पेस पेशेवरों की नई पीढ़ी तैयार कर रहा है, जो वैश्विक विमानन उद्योग के मानकों के अनुरूप आवश्यक कौशल से सुसज्जित है। उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ यह ज्ञान, अनुभव और तकनीकी विशेषज्ञता, भारत के एयरोस्पेस क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाती रहेगी तथा अंतिम विमान की आपूर्ति के बाद भी लम्बे समय तक देश की विमानन क्षमता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

भारत में निर्मित पहले सी-295 विमान के निर्माण के लिए देश को एयरोस्पेस विनिर्माण की सबसे जटिल और उच्च मानकों वाली प्रक्रियाओं में दक्षता हासिल करनी पड़ी। इसके लिए विशेष बुनियादी ढाँचा बनाने, उत्पादन सम्बंधी तकनीकी ज्ञान का हस्तांतरण, आपूर्तिकर्ताओं का प्रमाणीकरण, महत्त्वपूर्ण विनिर्माण प्रक्रियाओं का प्रमाणन, विमान की जटिल प्रणालियों का एकीकरण तथा वैश्विक गुणवत्ता मानकों पर खरा उतरने

में सक्षम कुशल कार्यबल का विकास आवश्यक था। यह सभी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स, एयरबस, रक्षा मंत्रालय, भारतीय वायु सेना तथा लगातार विस्तारित हो रहे भारतीय आपूर्तिकर्ताओं के नेटवर्क के बीच घनिष्ठ सहयोग और समन्वय स्थापित किया गया। इन सभी ने मिलकर वैश्विक विशेषज्ञता और भारत की निरंतर विकसित होती विनिर्माण क्षमता का प्रभावी समन्वय किया और एक ऐसी उत्पादन प्रणाली विकसित की गई जो अंतरराष्ट्रीय एयरोस्पेस उद्योग के गुणवत्ता और विनिर्माण मानकों के अनुरूप है।

इसलिए सी-295 की कहानी केवल टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स द्वारा एक विमान निर्माण व्यवसाय इकाई स्थापित करने की कहानी भर नहीं है। यह बड़े पैमाने पर औद्योगिक और तकनीकी क्षमताओं के निर्माण की कहानी है, जिनकी बदौलत एक ऐसा सशक्त तंत्र विकसित किया गया है जहाँ प्रौद्योगिकी, उद्योग, नवाचार और कुशल मानव संसाधन मिलकर भारत में एयरोस्पेस विनिर्माण के भविष्य को आकार दे रहे हैं। यह कार्यक्रम इस बात का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार रणनीतिक साझेदारियाँ राष्ट्रीय क्षमताओं के विकास को गति दे सकती हैं, औद्योगिक आत्मनिर्भरता सुदृढ़ कर सकती हैं और भारत के एयरोस्पेस क्षेत्र की अगली पीढ़ी की परियोजनाओं के लिए मज़बूत आधारशिला तैयार कर सकती हैं।

टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स का भारत में निर्मित पहला सी-295 विमान, अनुबंध के अनुरूप इस वर्ष सितम्बर में एयरबस और भारतीय वायु सेना (IAF) को सौंपा जाएगा। इसके लिए इस पहले विमान की परीक्षण उड़ान शुरू हो चुकी है जो सभी निर्धारित परीक्षणों और प्रमाणनों के सफल समापन के बाद सर्वोच्च गुणवत्ता मानकों पर खरे विमान के रूप में भारतीय वायु सेना को सौंपे जाने के साथ सम्पन्न होगी।

संजीव कुमार
सचिव
रक्षा उत्पादन विभाग

भारत की लम्बी दूरी की सटीक प्रहार क्षमता को नई मज़बूती

जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) द्वारा विकसित लॉन्ग रेंज लैंड अटैक क्रूज़ मिसाइल (LR-LACM) के सफल उड़ान परीक्षण का उल्लेख किया तो यह केवल किसी मिसाइल के सफल सैन्य परीक्षण की सामान्य सराहना नहीं थी। यह भारत की स्वदेशी क्रूज़ मिसाइल तंत्र विकसित करने की मंशा में आए एक शांत किंतु बड़े बदलाव की सार्वजनिक स्वीकारोक्ति थी। वर्तमान वैश्विक भू-राजनैतिक परिस्थितियों को देखते हुए इसका महत्त्व और बढ़ जाता है। 15 जून, 2026 को ओडिशा तट के निकट स्थित डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम द्वीप से एल आर – एल ए सी एम (LR-LACM) के दूसरे सफल उड़ान परीक्षण ने दिखा दिया कि भारत की स्वदेशी क्रूज़ मिसाइल प्रणालियाँ अब परिपक्वता का नया स्तर छू चुकी हैं। यह उपलब्धि भारत की विकसित होती प्रतिरोधक रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है।

विश्व भर में तेज़ी से बदलते भू-राजनैतिक परिदृश्य और हमारे प्रतिद्वंद्वी देशों की लगातार बढ़ती रक्षा क्षमताओं को देखते हुए, भारत के पास लम्बी दूरी तक सटीक प्रहार करने में सक्षम हथियार प्रणाली होना रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। मैसर्स ब्रह्मोस ऐरोस्पेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा विकसित ब्रह्मोस मिसाइल, दशकों से भारत की लम्बी दूरी की सटीक प्रहार क्षमता का पर्याय रही है। लेकिन युद्ध के आधुनिक परिदृश्य में भारत की लम्बी दूरी की सटीक प्रहार क्षमता में विविधता और बहु-आयामी संरचना आवश्यक है। LR-

LACM इस समीकरण में एक बिल्कुल नया और अत्याधुनिक आयाम जोड़ती है। अपनी स्टैंड-ऑफ़ लम्बी दूरी की क्षमता के कारण LR-LACM से हमारी रक्षा सेनाएँ अपनी ही भूमि अथवा मित्र देशों के सुरक्षित क्षेत्र से अभियान चलाने में सक्षम होंगी। इससे सशस्त्र बलों को अपनी सीमाओं और प्रादेशिक जलक्षेत्र से कहीं अधिक व्यापक दायरे में लक्ष्य भेदने और सैन्य अभियानों का संचालन करने का रणनीतिक लचीलापन मिलता है। इसके अलावा यह क्षमता हासिल करने से भारत को अपने विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र तथा व्यापक सामरिक हितों वाले क्षेत्रों

की सुरक्षा और निगरानी में भी महत्त्वपूर्ण रणनीतिक बढ़त मिलती है।

LR-LACM भारत की एक सबसॉनिक क्रूज़ मिसाइल है जो कम ऊँचाई पर उड़ान भरते हुए पारम्परिक (कन्वेंशनल) वॉरहेड के साथ विभिन्न प्रकार के स्थलीय लक्ष्यों पर सटीक हमला करने में सक्षम है। इसे जल और थल दोनों जगह से प्रक्षेपित किया जा सकता है। LR-LACM अत्यधिक गति की बजाय लगभग अदृश्य (स्टेल्थ), कम ऊँचाई पर लम्बी दूरी तक उड़ान भरने की क्षमता तथा कम लागत में बड़े पैमाने पर उत्पादन को प्राथमिकता देती है।

समकालीन युद्धों में आधुनिक वायु रक्षा प्रणालियाँ किसी बैलिस्टिक मिसाइल की उड़ान की ऊँचाई और उड़ानमार्ग का अनुमान लगाकर आसानी से उसकी निगरानी कर सकती हैं। लेकिन LR-LACM को ऐसा बनाया गया है कि वह दुश्मन के लिए एक गम्भीर रणनीतिक चुनौती बन जाए। कम ऊँचाई पर उड़ान भरने की अपनी क्षमता और लगभग अदृश्यता के कारण यह मिसाइल ज़मीन से केवल कुछ मीटर ऊपर उड़ान भरते हुए दुश्मन के रडार की पकड़ में नहीं आ पाती।

1,000 किलोमीटर तक की मारक क्षमता और पारम्परिक (कन्वेंशनल) वॉरहेड से लैस LR-LACM भारतीय सशस्त्र बलों को दूर तक सटीक प्रहार करने में सक्षम बनाती है। इनसे, महत्त्वपूर्ण अचल रणनीतिक ठिकानों के अलावा पुल, ताप विद्युत संयंत्र, रनवे, रक्षा प्रतिष्ठान, बक्तरबन्द सैन्य संरचनाओं तथा अन्य महत्त्वपूर्ण सचल लक्ष्यों को भी प्रभावी तरीक़े से निष्क्रिय किया जा सकता है। अपनी स्वदेशी और स्वायत्त नेविगेशन प्रणाली तथा जटिल भू-भाग के बीच कम ऊँचाई पर उड़ान भरने की क्षमता के कारण LR-LACM, दुश्मन के वायु रक्षा नेटवर्क को चकमा देते हुए उसके इलाक़े में भीतर तक स्थित महत्त्वपूर्ण सैन्य और रणनीतिक प्रतिष्ठानों को सटीक प्रहार से नष्ट करने में सक्षम है।

LR-LACM का यह सफल उड़ान परीक्षण केवल रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन – डीआरडीओ की उपलब्धि नहीं है, बल्कि भारतीय उद्योग जगत की क्षमता और दक्षता का भी एक सशक्त प्रमाण है। बेंगलुरु स्थित ऐरोनॉटिकल डेवलपमेंट इस्टैब्लिशमेंट (ADE) ने, डीआरडीओ की विभिन्न सहयोगी प्रयोगशालाओं के साथ मिलकर, LR-LACM कार्यक्रम का नेतृत्व किया। वहीं, हैदराबाद की भारत डायनेमिक्स लिमिटिड (BDL) और बेंगलुरु की भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटिड (BEL) इस परियोजना में डेवलपमेंट-कम-प्रोडक्शन पार्टनर्स (DcPPs) के

रूप में उत्पादन और सिस्टम इंटीग्रेशन की ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं। इस मिसाइल का वास्तविक स्वरूप, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के प्रभावी समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। भारत के प्रमुख सार्वजनिक एवं निजी रक्षा उद्योगों से लेकर विशिष्ट सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) तक, 35 से अधिक उद्योग LR–LACM के विद्युत एवं यांत्रिक प्रणालियों, उप–प्रणालियों तथा विभिन्न घटकों की आपूर्ति श्रृंखला में योगदान दे रहे हैं। इस प्रकार, LR–LACM का विकास डीआरडीओ और भारतीय उद्योगों के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है जिसने रक्षा विनिर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य और अधिक मज़बूत किया है। इसलिए, LR–LACM कार्यक्रम केवल एक सफल मिसाइल विकास परियोजना न होकर भारत के रक्षा उत्पादन क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर भी है। यह देश का उन्नत रक्षा एवं ऐरोस्पेस विनिर्माण तंत्र विकसित करने और उसे मज़बूती देने की भारत की बढ़ती क्षमता का स्पष्ट प्रमाण है।

LR–LACM के परीक्षण की सफल प्रारम्भिक उड़ान निसंदेह एक ऐतिहासिक और उल्लेखनीय उपलब्धि है। हालांकि, उपयोगकर्ताओं की भागीदारी के साथ होने वाले आगामी परीक्षणों तथा सैन्य

सेवाओं में इसके शामिल होने के बाद ही वास्तविक चुनौती शुरू होगी। सफल नमूना तैयार कर लेने के बाद व्यवस्थित तरीक़े से औद्योगिक स्तर पर बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए सोची–समझी, चरणबद्ध और एकाग्र योजना की आवश्यकता होगी। उन्नत रक्षा विनिर्माण क्षेत्र को निजी रक्षा उद्योगों के लिए खोलने सम्बंधी भारत सरकार के नीतिगत बदलाव ने निजी क्षेत्र में अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाओं की स्थापना को बढ़ावा दिया है। इससे देश में एक मज़बूत, लचीली और स्वदेशी रक्षा विनिर्माण क्षमता विकसित हुई है जो भारत की सामरिक सुरक्षा के साथ–साथ औद्योगिक भविष्य को भी सुदृढ़ आधार प्रदान कर रही है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026

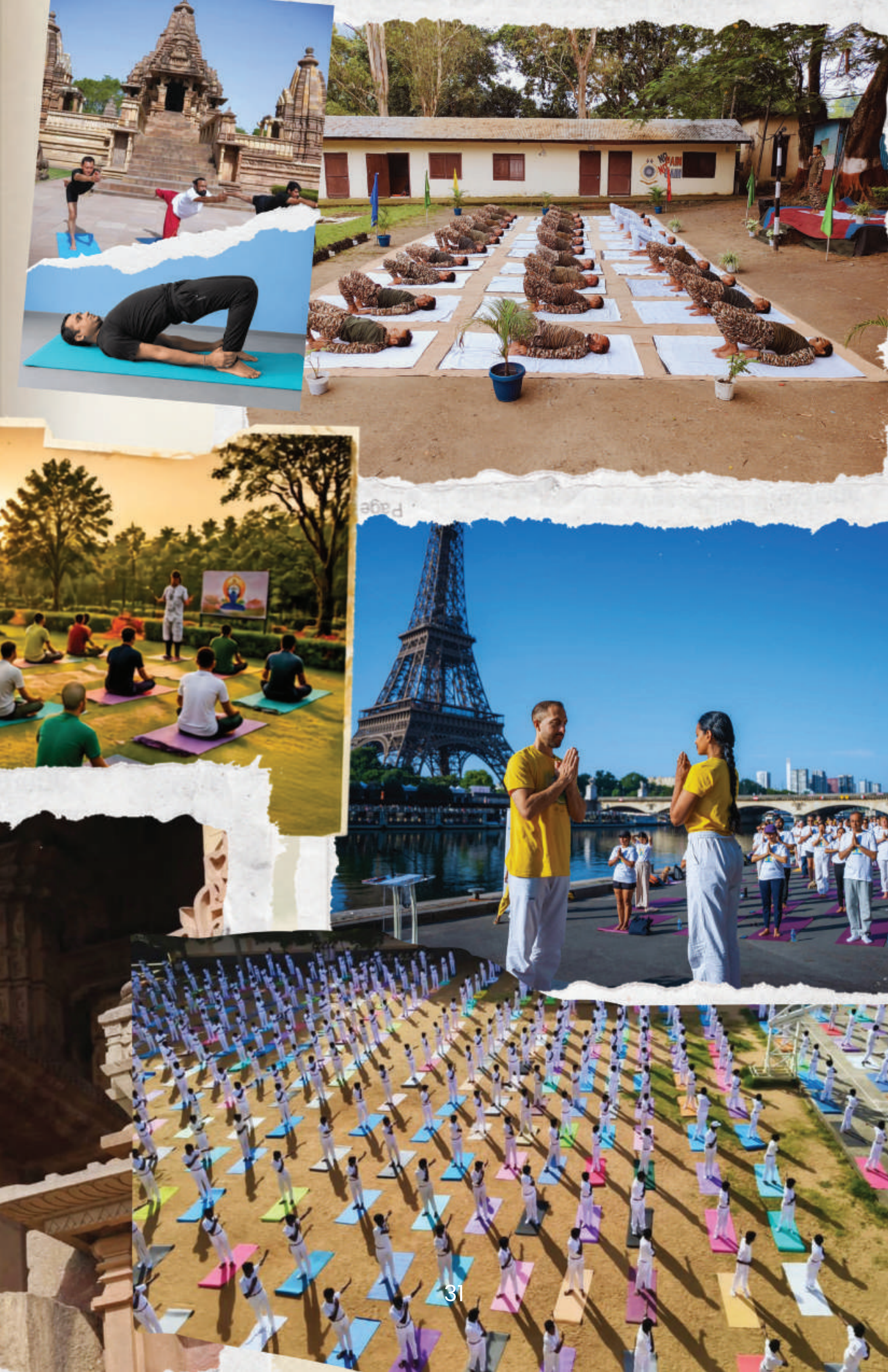

#IDY2026

INTERNATIONAL YOGA DAY 2026
SUNDARBAN YOGA
SUNDARBANS YOGA 2026

विश्व योगासन प्रतियोगिता

भारत का शानदार प्रदर्शन

योग मानवता के लिए भारत की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण देन में से एक है। 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रस्ताव और उसे मिले जबरदस्त अंतरराष्ट्रीय समर्थन के बाद 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' (IDY) घोषित किया गया। तब से योग सेहत और भलाई के लिए एक वैश्विक आंदोलन बन गया है। हाल ही में 'स्वस्थ आयु के लिए योग' थीम के साथ 12वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस दुनिया भर में मनाया गया।

योग की बढ़ती वैश्विक लोकप्रियता की इस यात्रा के क्रम में विश्व खेलों के इतिहास में अब एक नया अध्याय जुड़ गया है। भारत ने 4 से 8 जून, 2026 तक अहमदाबाद के EKA एरिना में पहली 'विश्व योगासन चैम्पियनशिप' की मेजबानी की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअल तौर पर इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से पहले आयोजित इस चैम्पियनशिप को 'सेहत और भलाई की दोहरी खुराक' बताया। उन्होंने कहा कि यह चैम्पियनशिप योगासन को एक प्रतिस्पर्धी खेल के तौर

पर नई पहचान दिलाएगी। उन्होंने भरोसा जताया कि भविष्य में इसे ओलम्पिक और अन्य मल्टी-स्पोर्ट इवेंट्स में जगह मिल सकती है। उन्होंने एथलीटों, प्रशिक्षकों, शोधकर्ताओं और खेल जगत के पेशेवरों के लिए अवसर पैदा करने की इसकी क्षमता पर भी जोर दिया और प्रतिभागियों को 'योग 365' आंदोलन को दुनिया भर में ले जाने के लिए प्रोत्साहित किया।

विश्व योगासन चैम्पियनशिप 2026 का शुभारम्भ

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, आयुष मंत्रालय, भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI), गुजरात खेल प्राधिकरण, गुजरात पर्यटन और गुजरात योगासन खेल संघ के सहयोग से आयोजित इस पाँच-दिवसीय चैम्पियनशिप ने एथलीटों को प्रतिस्पर्धी योगासन के लिए जरूरी ताकत, लचीलेपन, संतुलन, फ़ोकस और अनुशासन का प्रदर्शन करने के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान किया। इसमें 79 देशों के 522 एथलीटों ने हिस्सा लिया। 31 देशों के एथलीटों ने कम से कम एक मेडल जीता, जबकि दस देशों ने कम से कम एक गोल्ड मेडल हासिल किया, जो इस खेल में बढ़ती अंतरराष्ट्रीय रुचि को दर्शाता है।

भारत को सबसे अधिक मेडल

मेजबान भारत ने 102 गोल्ड मेडल समेत कुल 114 मेडल जीतकर अपना दबदबा दिखाया और मेडल टैली में सबसे ऊपर रहा। भारत ने 122 सदस्यों की टीम उतारी थी। इसमें खिलाड़ियों ने छह आयु वर्गों – सब-जूनियर पुरुष और

महिला (10–14 साल), जूनियर पुरुष और महिला (14–18 साल), सीनियर (18–28 साल), सीनियर ए (28–35 साल), सीनियर बी (35–45 साल) और सीनियर सी (45–55 साल) में हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता में आर्टिस्टिक पेयर, रिदमिक पेयर, लेग बैलेंस इंडिविजुअल, हैंड बैलेंस इंडिविजुअल, बैक बेंड इंडिविजुअल, ट्विस्टिंग बॉडी इंडिविजुअल और सुपाइन इंडिविजुअल जैसे आयोजन शामिल थे।

खासकर भारत के युवा खिलाड़ियों का प्रदर्शन बहुत उत्साहजनक रहा। देश के 102 गोल्ड मेडल में से लगभग आधे युवा खिलाड़ियों ने जीते। जूनियर और सब-जूनियर खिलाड़ियों ने 46 गोल्ड मेडल हासिल किए।

इस चैम्पियनशिप में दूसरे देशों के खिलाड़ियों का प्रदर्शन भी काफी अच्छा रहा। जापान 11 मेडल (तीन गोल्ड, तीन सिल्वर और पाँच ब्रॉन्ज) के साथ मेडल टैली में दूसरे स्थान पर रहा, जबकि अर्जेंटीना ने दो गोल्ड और तीन सिल्वर मेडल के साथ तीसरा स्थान हासिल किया। कुल मेडल जीतने के मामले में नेपाल दूसरी सबसे सफल टीम रही। उसने 52 मेडल (एक गोल्ड, 36 सिल्वर और 15 ब्रॉन्ज) जीते और मेडल टैली में पाँचवाँ स्थान हासिल किया। उज्बेकिस्तान ने 25 मेडल जीते, जिनमें एक गोल्ड, 13 सिल्वर और 11 ब्रॉन्ज शामिल थे।

एक श्वास, एक मंच, एक विश्व

मेडल और रैंकिंग से कहीं आगे बढ़कर भारतीय परम्परा पर आधारित और

दुनिया भर में पसंद की जा रही पहली विश्व योगासन चैम्पियनशिप अलग-अलग देशों के एथलीटों को एक मंच पर एक साथ लाने में सफल हुई है। दुनिया भर से आए सैकड़ों एथलीटों की भागीदारी ने यह दिखाया कि योगासन न केवल सेहत के लिए एक अभ्यास के तौर पर, बल्कि एक प्रतिस्पर्धी खेल के तौर पर भी तेजी से अपनी पहचान बना रहा है।

इस चैम्पियनशिप ने फोकस, संतुलन, अनुशासन और तालमेल जैसे योगासन से जुड़े उन सार्वभौमिक मूल्यों को भी दर्शाया, जिनके माध्यम से सभी एथलीट बेहतरीन प्रदर्शन की साझा चाहत से जुड़े हुए थे। इस तरह, यह चैम्पियनशिप संस्कृतियों, पीढ़ियों और खेल से जुड़ी उम्मीदों के मिलन का केंद्र बन गई।

व्यक्तिगत विषय से प्रतिस्पर्धी उत्कृष्टता तक

योगासन का एक प्रतिस्पर्धी खेल के तौर पर उभरना योग की वैश्विक यात्रा में एक नया आयाम जोड़ता है। प्रतिस्पर्धी योगासन के लिए सटीकता, शारीरिक नियंत्रण, एकाग्रता, लचीलेपन और निरंतर अनुशासन की जरूरत होती है। प्रतियोगिता के लिए सुव्यवस्थित अवसर तैयार कर यह एथलीटों, कोचों, प्रशिक्षकों, शोधकर्ताओं और खेल से जुड़े अन्य पेशेवरों के लिए नए रास्ते खोल सकता है। इसलिए प्रथम विश्व योगासन चैम्पियनशिप केवल एक वैश्विक खेल के सफल आयोजन से कहीं अधिक है। यह योगासन को पारम्परिक व्यक्तिगत अभ्यास से अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धी मंच तक ले जाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

जनभागीदारी से जन सुरक्षा

पूरे समाज का सहारा बनी एक अनोखी पहल

हमारे देश में शादी–ब्याह केवल दो परिवारों का मिलन नहीं बल्कि पूरे समाज का उत्सव होता है। लोग अपनी खुशियाँ बाँटने के लिए दावतों, गहनों और सजावट पर लाखों रुपये ख़र्च करते हैं। लेकिन महाराष्ट्र के नांदेड़ ज़िले के एक परिवार ने अपनी शादी की ख़ुशी कुछ इस तरह बाँटी कि उसकी चर्चा ख़ुद माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में की। इस परिवार ने समाज के सामने एक ऐसी मिसाल पेश की है जो मुश्किल समय में किसी बेसहारा परिवार का सबसे बड़ा संबल बन सकती है।

पेठकर परिवारः खुशियों के साथ बाँटी सुरक्षा की गारंटी

नांदेड़ के कंधार तालुका स्थित बहादुरपुरा गाँव के पेठकर परिवार ने शादी के अवसर पर फ़िज़ूलख़र्ची करने के बजाय गाँव के सभी मतदाताओं (लगभग 3,500 लोगों) के लिए एक लाख रुपये के 'दुर्घटना बीमा' की व्यवस्था की। इस मानवीय सोच के पीछे की वजह

बताते हुए सिद्धेश्वर भगवानराव पेठकर कहते हैं:

"मेरे बड़े भैया (श्री अनूप भगवानराव पेठकर) एक इंश्योरेंस एजेंट हैं। हमारे गाँव में किसान और मज़दूर बहुत हैं। खेत में काम करते समय जंगली जानवरों के हमले, मशीनों से होने वाले हादसे या सड़क दुर्घटनाएँ आम बात हैं। ऐसे में वे अक्सर हमारे पास आते और पूछते थे कि 'भैया, छोटे बच्चे हैं, बीवी है, आर्थिक स्थिति बहुत खराब है, क्या इंश्योरेंस के माध्यम से कुछ मदद मिल सकती है?' इन घटनाओं ने हमें भीतर तक झकझोर दिया। हमारी पूरी फैमिली के ज़हन में यह बात आई कि इस शादी में कोई फ़िज़ूलख़र्ची नहीं करनी है, बल्कि उन पैसों से पूरे गाँव के लिए कुछ करना है।"

यह पेठकर परिवार की पहली ऐसी अनोखी पहल नहीं थी। इससे पहले बड़े भाई की शादी में भी उन्होंने एक हज़ार से अधिक हेलमेट बाँटे थे। सिद्धेश्वर बताते हैं कि पुलिस के डर से नहीं, बल्कि जब लोग प्यार से दी गई चीज़ का इस्तेमाल करते हैं, तो यह आदत बन जाती है। आज जब लोग उनके पास आकर कहते हैं कि "तुम्हारी वजह से हमारी जान बच गई," तो उन्हें लगता है कि उनका जीवन और उद्देश्य दोनों सफल हो गए।

सरकारी बीमा योजनाएँ: देश के करोड़ों परिवारों का सुरक्षा कवच

पेठकर परिवार की यह पहल दर्शाती है कि किसी अनहोनी के बाद एक पीड़ित परिवार को आर्थिक सुरक्षा की कितनी आवश्यकता होती है। इसी आवश्यकता को समझते हुए भारत सरकार देश के करोड़ों परिवारों तक सुरक्षा का मज़बूत कवच पहुँचा रही है। 'प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना' और 'प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना' आज देश के हर ग़रीब और मध्यम वर्गीय परिवार का सहारा बन गई हैं।

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY)

यह योजना दुर्घटना के समय एक बहुत बड़ा आर्थिक संबल प्रदान करती है।

- **प्रीमियम और कवर:** इसका सालाना प्रीमियम मात्र 20 रुपये है। यानी एक साल के केवल 20 रुपये में 2 लाख रुपये तक का दुर्घटना बीमा मिलता है।
- **लाभार्थी और सहायता:** अब तक इस योजना से 58 करोड़ से अधिक लोग जुड़ चुके हैं, जिनमें करीब 28 करोड़ हमारी माताएँ और बहनें हैं। संकट के समय इस योजना के

माध्यम से पीड़ित परिवारों को अब तक 3,700 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता राशि मिल चुकी है।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (PMJJBY)

जीवन की अनिश्चितताओं के बीच यह योजना भी एक जीवनरक्षक की तरह है।

- **प्रीमियम और कवरः** किसी व्यक्ति की दुखद मृत्यु होने पर यह योजना उसके परिवार को 2 लाख रुपये का जीवन बीमा कवर देती है। इसका वार्षिक प्रीमियम केवल 436 रुपये है, यानी एक दिन का मुश्किल से डेढ़ रुपया।
- **लाभार्थी और सहायताः** इस योजना से देश के 27 करोड़ से अधिक लोग जुड़ चुके हैं और अब तक लगभग 11 लाख परिवारों को करीब 22 हजार करोड़ रुपये की सहायता दी जा चुकी है।

ये 3,700 करोड़ या 22 हजार करोड़ केवल आंकड़े नहीं हैं। इन आंकड़ों के पीछे उन लाखों परिवारों की जीवन गाथाएँ हैं, जिन्हें मुश्किल वक्त में आसरा मिला है। इस आर्थिक मदद से किसी माँ को अपने बच्चों की पढ़ाई जारी रखने का हौसला मिला तो किसी पत्नी को घर की जिम्मेदारियाँ संभालने का संबल।

जैसा कि पेठकर परिवार ने साबित किया है, कई बार एक छोटा सा क़दम बहुत बड़ा बदलाव ला सकता है। साल भर में 20 रुपये या 436 रुपये का छोटा सा प्रीमियम किसी भी परिवार के भविष्य को सुरक्षित कर सकता है। ज़रूरत बस इस बात की है कि हम इन कल्याणकारी योजनाओं का हिस्सा बनें और अपने आस-पड़ोस के लोगों को भी इसके प्रति जागरूक करें। 'जन सुरक्षा' का यही सच्चा अर्थ है।

हरगिला आर्मी

जन संरक्षण आंदोलन

कई दशकों तक असम के 'ग्रेटर एडजुटेंट स्टॉर्क' (जिसे स्थानीय भाषा में 'हरगिला' कहा जाता है) को राज्य के कुछ हिस्सों में संशय की दृष्टि से देखा जाता था। यह एक बहुत बड़ा पक्षी है जो मरे हुए जीवों को खाकर पर्यावरण को साफ रखने में अहम भूमिका निभाता है। इसके बावजूद कुछ समुदायों में इसे अशुभ माना जाता था और इसे भगाने के लिए उन पेड़ों को काट दिया जाता था जिन पर ये पक्षी घोंसले बनाते थे। इसी स्थिति में वन्यजीव वैज्ञानिक डॉ. पूर्णिमा देवी बर्मन ने अपना काम शुरू किया। उन्होंने उस सोच को बदलने का संकल्प लिया जो तथ्यों के बजाय डर पर आधारित थी।

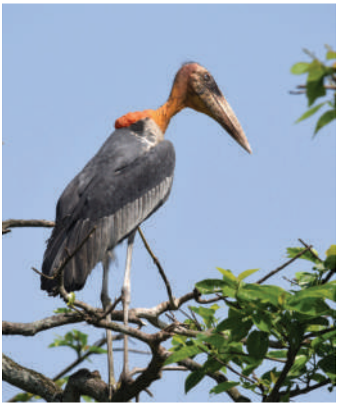

अपशगुन से एक पहचान बनने तक का यह बदलाव डॉ. बर्मन की बातों से सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है। उन्होंने महिलाओं से बात करके और इस पक्षी की पर्यावरणीय भूमिका के पीछे के विज्ञान को समझाकर फैली हुई भ्रामक

धारणाओं को दूर करने का बीड़ा उठाया। वह बताती हैं कि यह आंदोलन बहुत छोटे स्तर पर शुरू हुआ था: *'हमने बहुत छोटे स्तर से शुरुआत की थी और अब यह बहुत व्यापक हो गया है।'* संरक्षण के काम में लगे अन्य लोगों के लिए उनका संदेश हमेशा यही रहा है कि 'कोई भी काम छोटा नहीं होता' और किसी खास प्रजाति को बचाने की कोशिश असल में 'उसके आस-पास रहने वाले लोगों' के साथ मिलकर किया जाने वाला काम है। वह इस काम में लगे लोगों से महिलाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने और समुदायों को केवल तमाशबीन न मानकर उन्हें संरक्षण के 'योद्धाओं' के तौर पर सबसे आगे लाने का आग्रह करती हैं।

इस दृष्टिकोण का असर कामरूप ज़िले की महिलाओं द्वारा अपनी पहचान बताने के तरीके में स्पष्ट रूप से दिखता है। इस पक्षी को प्रतिदिन 'हरगिला आर्मी' के तौर पर याद किया जाता है और महिलाओं के नाम भी इस स्टॉर्क से जुड़ गए हैं। यह पक्षी अब घरों, लोक गीतों और बिहू त्योहार का हिस्सा बन गया है। साथ ही, गाँवों में घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क किया जाता है ताकि नए सदस्य इस मुहिम से जुड़ते रहें।

यह काम सही तरह से चलता रहे, इसके लिए लगातार सतर्क रहना पड़ता है। महिलाएँ और उनका परिवार उन पेड़ों की निगरानी करते हैं जिनमें घोंसले बने होते हैं। जब चूज़े नीचे गिर जाते हैं तो घोंसलों के नीचे जाल बिछा दिए जाते हैं। इसके बाद इन पक्षियों को असम वन विभाग की मदद से पुनर्वास (rehabilitation) के लिए सौंपा जाता है और फिर जंगल में छोड़ दिया जाता है। इसके साथ ही, हज़ारों महिलाओं—जिनमें से कई पहले से ही कुशल बुनकर थीं—को कपड़ों पर हरगिला के डिजाइन (मोटिफ़) बनाने की ट्रेनिंग दी गई है, जिससे संरक्षण का काम उनकी आजीविका का माध्यम बन गया

है। डॉ. बर्मन का कहना है कि जागरूकता अभियान, घोंसला बनाने वाले स्टॉर्क के लिए गोद भराई जैसी रस्में और लोक गीतों में इस पक्षी को शामिल करने से स्टॉर्क 'हमारे घरों में रोजाना लिए जाने वाला नाम' और 'हमारी परम्परा का हिस्सा' बन गया है।

बर्मन के अनुसार इस आंदोलन में कई भावनात्मक मोड़ आए। इनमें से एक वह पल था जब लोगों ने पक्षियों का शिकार करने के बजाय उन्हें बचाने की माँग शुरू की, और दूसरा वह जब महिलाओं ने 'हरगिला वॉच के बेबी शॉवर' (गोद भराई कार्यक्रम) में हिस्सा लिया और गर्व के साथ खुद को 'हरगिला आर्मी' का सदस्य बताया। बदलाव का पैमाना इस तरह मापा जा सकता है: शुरुआत में घोंसले बनाने वाली 27 कॉलोनियाँ थीं, जिनमें से केवल 13 सक्रिय थीं; अब यह संख्या बढ़कर कामरूप जिले में 322 और पूरे असम में 485 हो गई है। स्टॉर्क पक्षियों की संख्या भी 2007 में लगभग 400-450 से बढ़कर आज लगभग 2,000 हो गई है। इस बदलाव के कारण आईयूसीएन (IUCN) ने इस प्रजाति के खतरे की स्थिति की समीक्षा की है।

समुदाय-संचालित इस सफलता को राष्ट्रीय स्तर पर औपचारिक मान्यता मिली है। डॉ. पूर्णिमा देवी बर्मन को 'हरगिला आर्मी' के साथ उनके संरक्षण कार्यों के लिए राष्ट्रपति द्वारा 'नारी शक्ति पुरस्कार 2017' से सम्मानित किया गया था। उन्हें खेल, समाज सेवा, विज्ञान, कला, कृषि, शिक्षा, संरक्षण, सुरक्षा, हस्तशिल्प और रक्षा जैसे विविध क्षेत्रों के पुरस्कार विजेताओं की सूची में शामिल किया गया था। हाल ही में उन्हें कामरूप जिले में, जिसमें आज दुनिया में सबसे ज्यादा स्टॉर्क पक्षी पाए जाते हैं, 'हरगिला आर्मी' को संगठित करने के उनके काम के लिए 2024 का 'व्हिटली गोल्ड अवार्ड' दिया गया।

पूर्णिमा बर्मन अपने इस अनुभव को दूसरों के लिए एक खुले निमंत्रण के तौर

पर पेश करती हैं। वह युवा संरक्षणवादियों और आम नागरिकों से आगे आने और 'स्वयं पर विश्वास करने' को प्रेरित करती हैं। उनका कहना है कि 'कोई भी काम छोटा नहीं होता' और एक छोटी सी शुरुआत भी एक दिन 'एक बड़े या ऐतिहासिक आंदोलन' का रूप ले सकती है, ठीक वैसे ही जैसे हरगिला संरक्षण प्रयास ने किया। उनकी अपील एक सरल सिद्धांत पर आधारित है कि किसी एक प्रजाति को बचाने का मतलब सिर्फ़ उस प्रजाति को बचाना नहीं होता। उनका मानना है कि हरगिला के लिए काम करने का मतलब 'हमारे लोगों, हमारे भविष्य, हमारे अस्तित्व, हमारी आजीविका और हमारी संस्कृति' के लिए काम करना भी है। किसी भी संरक्षण प्रयास में जो वास्तव में सही हो, स्थानीय समुदायों–और खासकर महिलाओं–को 'अग्रणी योद्धाओं' के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाना चाहिए, न कि उन्हें हाशिए पर रखना चाहिए। देश के नाम दिए संदेश में उन्होंने कहा कि एक पक्षी को अपनाएँ, एक प्रजाति को अपनाएँ, उसे अपने दिल में बसाएँ और कदम उठाएँ। क्योंकि, जैसा कि वह हमें याद दिलाती हैं, *"कौन जानता है कि आपका उठाया गया कोई कदम एक दिन एक बहुत बड़ा आंदोलन बन सकता है।"*

जैसा कि प्रधानमंत्री ने 135वें 'मन की बात' कार्यक्रम में देश को पूर्णिमा बर्मन की कहानी सुनाते हुए कहा, इससे पता चलता है कि "जब सही जानकारी दी जाती है, तो बरसों पुरानी सोच भी बदल सकती है"। देश से पूर्णिमा बर्मन की अपील भी इसी भावना को प्रोत्साहित करती है कि हर कोई 'एक पक्षी को अपनाए, एक प्रजाति को अपनाए' और यह समझे कि किसी एक जीव की रक्षा करना, 'हमारे लोगों, हमारे भविष्य, हमारे अस्तित्व, हमारी आजीविका और हमारी संस्कृति' की रक्षा करने के समान ही है।

ऐन्थनी न्गुली
सचिव
युवा संसाधन एवं खेल विभाग, नगालैंड

फ़ुटबॉल के क्षेत्र में नगालैंड की कामयाबी

नगालैंड के लोगों में फुटबॉल के प्रति विशेष लगाव है। आम लोगों का खेल माना जाने वाला फुटबॉल सरल, किफ़ायती और सभी के लिए सुलभ है, क्योंकि इसे खेलने के लिए नाममात्र के उपकरण और बुनियादी ढाँचा चाहिए। इसे बच्चों और युवाओं के बीच व्यापक भागीदारी बढ़ाने वाला एक आदर्श खेल कहा जा सकता है। गाँव, क़स्बों और स्कूलों में खेले जाने वाले फुटबॉल ने राज्य की खेल संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनकर अनुशासन, टीम भावना और सामुदायिक एकता सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

खेलों की परिवर्तनकारी शक्ति को पहचानते हुए नगालैंड सरकार के युवा संसाधन एवं खेल विभाग ने ज़मीनी स्तर के फ़ुटबॉल को मज़बूती देने तथा बच्चों और महिलाओं के लिए अधिक अवसर उपलब्ध कराने की दीर्घकालिक दृष्टि अपनाई है। इसे साकार करने के लिए दो प्रमुख पहल– ग्रासरूट्स फुटबॉल फ़ेस्टिवल बेबी लीग और नगालैंड महिला फ़ुटसल लीग शुरू की गई हैं। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जून 2026 के 'मन की बात' कार्यक्रम में इनकी सराहना करते हुए इन्हें ऐसी प्रेरणादायक पहल बताया जिसका अनुकरण देश के अन्य राज्य भी कर सकते हैं।

जून 2024 में शुरू की गई ग्रासरूट्स फुटबॉल फ़ेस्टिवल बेबी लीग का उद्देश्य, 5 से 12 वर्ष तक की आयु वर्ग के बच्चों का संगठित फुटबॉल से परिचय कराना, उनमें खेलों के प्रति आजीवन रुचि विकसित करना तथा उभरती युवा प्रतिभाओं की पहचान करना है। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि यह पहल, खेलों में अधिक से अधिक भागीदारी को बढ़ावा देने के साथ-साथ माता-पिता और परिवारों को अपने बच्चों की खेल यात्रा देखने, समझने और उनका उत्साहवर्द्धन करने के लिए प्रेरित करके एक

सकारात्मक खेल संस्कृति का निर्माण करती है।

राज्य के प्रमुख ज़मीनी स्तर के फुटबॉल कार्यक्रमों में से एक बन चुकी बेबी लीग अपने तीसरे संस्करण में प्रवेश कर चुकी है। कोहिमा में हर वर्ष इसका आयोजन होता है और भविष्य में इसे चरणबद्ध तरीक़े से नगालैंड के सभी ज़िलों तक विस्तारित करने की योजना है। यह खेल उत्सव, चार आयु वर्गों –5 से 6 वर्ष, 7 से 8 वर्ष, 9 से 10 वर्ष तथा 11 से 12 वर्ष– के बालक और बालिकाओं के लिए है। राज्यभर में अधिक से अधिक बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय समाचार-पत्रों और सोशल मीडिया में विज्ञापन दिए जाते हैं।

बेबी लीग में प्रतिस्पर्धा की अपेक्षा भागीदारी, आनंद और सीखने पर अधिक बल दिया जाता है जो परम्परागत प्रतियोगिता से एकदम भिन्न है। प्रशिक्षित

कोच और तकनीकी अधिकारी बच्चों के लिए छोटे-छोटे मैच तथा उनकी आयु के अनुरूप फुटबॉल गतिविधियों का आयोजन करते हैं ताकि वे एक सुरक्षित, आनंदप्रद और उत्साहवर्द्धक वातावरण में आपसी समन्वय, आत्मविश्वास, टीम भावना तथा फुटबॉल के बुनियादी कौशल विकसित कर सकें। वर्ष 2026 के संस्करण में

लगभग 420 बच्चों ने भाग लिया, जो इस पहल की लगातार बढ़ती लोकप्रियता दर्शाता है।

इस कार्यक्रम का सबसे उत्साहजनक परिणाम यह रहा कि शुरूआत से ही प्रतिभागियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अब अभिभावक हर वर्ष अपने बच्चों का पंजीकरण कराते हैं और उत्सव के दौरान उनका भरपूर उत्साहवर्द्धन भी करते हैं। इससे खेल का एक ऐसा जीवंत वातावरण तैयार होता है जिससे बच्चे खेलों को केवल महारत हासिल करने का माध्यम नहीं अपितु मनोरंजन, शारीरिक क्षमता और व्यक्तित्व विकास के प्रभावी साधन के रूप में भी देखते हैं।

असाधारण प्रतिभा और क्षमता वाले बच्चों की पहचान करने के लिए कोच और तकनीकी अधिकारी इस उत्सव के दौरान प्रतिभागियों पर क़रीब से नज़र रखते हैं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को बाद में उन्नत प्रशिक्षण, विभागीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों, राज्य स्तरीय कोचिंग शिविरों तथा अवसर उपलब्ध होने पर उच्च स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए चुना जाता है। इस तरह बेबी लीग, नगालैंड में फुटबॉल की एक सुव्यवस्थित प्रतिभा विकास प्रणाली की नींव के रूप में कार्य करती है।

संगठित खेल में महिलाओं और बालिकाओं को भी समान लाभ उपलब्ध करवाने के लिए विभाग ने वर्ष 2024 में 'नगालैंड महिला फ़ुटसल लीग' शुरू की। नगालैंड फुटबॉल ऐसोसिएशन के सहयोग से आयोजित इस लीग का दूसरा संस्करण 11 से 16 मई, 2026 तक कोहिमा स्थित इन्दिरा गाँधी स्टेडियम में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

फ़ुटसल, तेज़ गति से खेले जाने वाली फ़ुटबॉल का, पाँच-पाँच खिलाड़ियों की टीम वाला प्रारूप है। यह प्रारूप खिलाड़ियों में गेंद पर बेहतर नियंत्रण, तकनीकी दक्षता, टीम भावना तथा त्वरित निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने के लिए चुना गया है। इसके अलावा यह आउटडोर फुटबॉल की ओर बढ़ने का बढ़िया आधार भी है। विभाग की इस पहल का उद्देश्य महिलाओं और बालिकाओं में फुटबॉल के प्रति रुचि बढ़ाना, खेलों में

उनकी भागीदारी बढ़ाना तथा उन्हें अपना कौशल विकसित करने और बेहतरीन प्रदर्शन के समान अवसर सुनिश्चित कराना है।

वर्ष 2026 की लीग में नगालैंड के विभिन्न ज़िलों के फुटबॉल संघों में पंजीकृत आठ महिला फुटबॉल क्लब शामिल हुए। योग्य रेफ़री और तकनीकी अधिकारियों की देखरेख में फ़ीफ़ा फुटसल खेल नियमों के तहत आयोजित इस प्रतियोगिता में खिलाड़ियों को प्रतिस्पर्धा का पेशेवर तरीक़े से संचालित मंच मिला। अधिक से अधिक भागीदारी प्रोत्साहित करने के लिए विभाग ने सभी प्रतिभागी टीमों के रहने और खाने की व्यवस्था भी की।

महिला फ़ुटसल लीग नगालैंड में भविष्य में होने वाली जिला एवं राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान करने तथा पूरे राज्य के महिला फुटबॉल क्लबों को सशक्त करने का एक महत्त्वपूर्ण मंच बनी है। इस लीग ने पेशेवर तरीक़े से आयोजित प्रतियोगिता, समान अवसर और आकर्षक पुरस्कार जैसे प्रोत्साहनों के माध्यम से अधिक से अधिक बालिकाओं और युवा महिलाओं को आत्मविश्वास के साथ फुटबॉल और फुटसल अपनाने को प्रेरित किया है। महिला फुटबॉल की बढ़ती लोकप्रियता और दृश्यता से परिवार तथा समुदाय भी महिला खिलाड़ियों का समर्थन करने के लिए आगे आए हैं। यही नहीं, इसने क्लबों और खिलाड़ियों को आगामी संस्करणों की पूरे वर्ष तैयारी करने के लिए उत्साहित किया है जिससे यह लीग खिलाड़ियों के विकास और स्पर्धात्मक उत्कृष्टता हासिल करने की एक निरंतर प्रक्रिया बन गई है।

हालांकि भौगोलिक दृष्टि से विविधतापूर्ण राज्य में ज़मीनी स्तर पर खेलों का विस्तार करना कुछ चुनौतियाँ पेश करता है पर फिर भी विभाग ज़िलों में खेल का बुनियादी ढाँचा विकसित करने, कोचिंग एवं तकनीकी क्षमता सुदृढ़ करने तथा नगालैंड फ़ुटबॉल ऐसोसिएशन और ज़िला फुटबॉल ऐसोसिएशनों के साथ घनिष्ठ सहयोग करके फुटबॉल की पहुँच का विस्तार करने को प्रतिबद्ध है। इन प्रयासों से अधिकाधिक बच्चों और महिलाओं को संगठित फुटबॉल में भाग लेने का अवसर मिलेगा, राज्य का फुटबॉल तंत्र मज़बूत होगा तथा खिलाड़ियों की भावी पीढ़ियों के लिए निरंतर विकास का सुदृढ़ मार्ग प्रशस्त होगा।

नगालैंड के लिए माननीय प्रधानमंत्री से मिली सराहना अत्यंत गर्व और उत्साह का विषय है। इससे इस बात की पुनः पुष्टि होती है कि ज़मीनी स्तर पर खेलों में निरंतर किया गया निवेश खेल के मैदान से कहीं आगे तक समाज पर सकारात्मक और स्थायी प्रभाव डाल सकता है। 'जो खेले, वही खिले' की भावना से प्रेरित होकर युवा संसाधन एवं खेल विभाग एक समावेशी फुटबॉल तंत्र बनाने को प्रतिबद्ध है, जिसमें हर बच्चा और हर महिला खेल सके, सीख सके और उत्कृष्टता प्राप्त करने का समान अवसर पा सके।

शास्त्रार्थ से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक

भारत की ज्ञान विरासत का पुनर्जागरण

आज हम तकनीक और एआई के उस अभूतपूर्व युग में जी रहे हैं, जहाँ हर दिन नए इनोवेशन और रिसर्च सामने आ रहे हैं। मशीनों और एल्गोरिदम के निरंतर स्मार्ट होते जाने के इस दौर में हमारे सामने एक बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल खड़ा हो गया है– आख़िर लोगों की वैचारिक रचनात्मकता को कैसे बचाए रखा जाए? नई तकनीक के साथ तेज़ गति से आगे बढ़ते हुए हम अपनी प्राचीन जड़ों से कैसे जुड़े रहें?

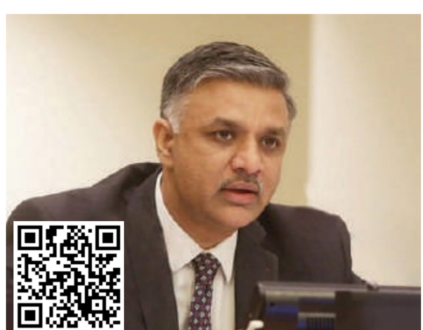

इन अहम सवालों का समाधान हमारे देश के ऐतिहासिक शिक्षण संस्थानों ने खोजना शुरू कर दिया है। हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में इस बात पर गहरा संतोष

व्यक्त किया कि भारत में शिक्षा जगत आधुनिक तकनीक को हमारे पारम्परिक ज्ञान के साथ जोड़ने का शानदार प्रयास कर रहा है। 'शास्त्रार्थ' की प्राचीन विधा से लेकर 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' की अत्याधुनिक पढ़ाई तक भारत की ज्ञान विरासत अब एक नए अवतार में दुनिया का मार्गदर्शन करने के लिए तैयार है।

नालंदा विश्वविद्यालयः 'शास्त्रार्थ' की प्राचीन परम्परा का पुनर्जागरण

सदियों पुरानी हमारी नालंदा विश्वविद्यालय की गौरवशाली परम्परा अब अपने नए स्वरूप में भारत का भविष्य गढ़ रही है। ज्ञान और मंथन का यह विश्व-प्रसिद्ध केंद्र एक बार फिर से 'शास्त्रार्थ' की अपनी प्राचीन परम्परा को जीवंत कर रहा है। शास्त्रार्थ केवल अपनी बात रखने या किसी पर थोपने का माध्यम नहीं है। यह वाद-संवाद और बौद्धिक मंथन की एक अत्यंत अनुशासित प्रक्रिया है। इसमें तथ्य और तर्क के साथ अपनी बात कहना जितना ज़रूरी है, दूसरों के विचारों को धैर्य से सुनना और समझना भी उतना ही अहम है। नालंदा विश्वविद्यालय ने इसे अपने दीक्षांत समारोह का हिस्सा बनाकर एक मिसाल पेश की है, जिसमें लगभग आधे प्रतिभागी अन्य देशों से आए छात्र थे।

इस वैचारिक पहल के मूल उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी कहते हैंः

"शास्त्रार्थ के माध्यम से हम छात्रों के अंदर मुख्य रूप से चार गुण विकसित

करना चाहते हैं– सोचने की क्षमता, स्वतंत्र व्यक्तिगत विचार, भाषा तथा अनुशासन। वाद–विवाद की प्रतियोगिताओं में आम तौर पर हार और जीत को महत्त्व दिया जाता है। शास्त्रार्थ इस हार–जीत के विचार से परे है। किसने क्या सीखा, शास्त्रार्थ में यह महत्त्वपूर्ण है। अर्थात सभी प्रतिभागियों के तर्क–वितर्क के बाद क्या तथ्य और विचार सामने आए, यह अधिक महत्त्व रखता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के वर्तमान युग में, विश्वविद्यालयों में शास्त्रार्थ जैसे कार्यक्रमों का आयोजन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर प्रतिबंध लगाने से कई गुना बेहतर है। क्योंकि ऐसे कार्यक्रम छात्रों में सोचने–समझने और स्वतंत्र रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित करने में सहायक हैं।"

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालयः संस्कृत और डेटा साइंस का ऐतिहासिक संगम

युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़े रखकर उन्हें अत्याधुनिक तकनीक के लिए तैयार करने का एक और अभिनव प्रयास दिल्ली स्थित 'केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय' कर रहा है। यह विश्वविद्यालय 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा साइंस' (B. Tech in AI & Data Science) में अपना नया बी.टेक. प्रोग्राम शुरू करने जा रहा है। आधुनिक तकनीक को भारत के पारम्परिक ज्ञान से जोड़ने की दिशा में यह एक मील का पत्थर है। इससे न केवल भारतीय भाषाओं के लिए नए AI टूल्स तैयार करने में मदद मिलेगी, बल्कि हमारे अनमोल प्राचीन ग्रंथों और हजारों साल पुरानी पांडुलिपियों को

डिजिटल रूप में संरक्षित करने के काम को भी नई गति प्राप्त होगी।

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. श्रीनिवास वरखेडी इस नए विज़न को स्पष्ट करते हुए बताते हैंः

"केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय पारम्परिक ज्ञान संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध संस्था है। जब तक संस्कृत और शास्त्र नई तकनीक के साथ नहीं जुड़ेंगे, तब तक इनकी रक्षा और विकास नहीं हो सकता है। इसी भावना के साथ हमने बी.टेक. इन आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस जैसे नए पाठ्यक्रम का आरम्भ किया है जिसमें संस्कृत और भारतीय भाषाओं का विशेष अध्ययन होगा। प्राचीन भारत का ज्ञान केवल हमारे देश के लिए नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए अपेक्षित है। इसलिए आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस और नए तकनीकी क्षेत्रों के द्वारा प्राचीन ज्ञान भंडार को हम नए ज्ञान सृजन क्षेत्र तक पहुँचा सकते हैं। युवाओं का नई टेक्नोलॉजी के साथ जुड़ाव और उनकी आकांक्षाएँ एवं आशाएँ हमारे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा हैं।"

आज जब पूरी दुनिया AI के नफ़े–नुक़सान को लेकर बँटी हुई है, तब भारत ने यह रास्ता दिखाने की कोशिश की है कि तकनीक का सबसे अच्छा उपयोग ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन में किया जा सकता है। नालंदा का 'शास्त्रार्थ' कार्यक्रम जहाँ युवा मस्तिष्कों में स्वतंत्र विचार और तार्किक क्षमता के बीज बो रहा है, वहीं केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय का 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' का पाठ्यक्रम उन विचारों को भविष्य की तकनीक में ढालेगा। एक प्राचीन परम्परा को आज के समय से जोड़ने का यह प्रयास सुनिश्चित करता है कि भारत का युवा अपनी जड़ों से जुड़ा रहकर भी तकनीक के क्षेत्र में नेतृत्व करने के लिए पूरी तरह तैयार है।

ब्रह्मकमल डोमिनिकाना

कैरिबियन में भारतीय वैदिक संस्कृति का एक सेतु

इंटरव्यू यहां देखें:

ब्रह्मकमल डोमिनिकाना – डोमिनिकन रिपब्लिक में सुश्री सोनिया रॉड्रिगेस के नेतृत्व में चल रहा एक आध्यात्मिक समूह 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से चर्चा में आया है। अपने गुरु श्री सत्य साईं बाबा की प्रेरणा से लगभग दो दशक पहले शुरू हुई वेदों की साधना अब इस समूह के लिए जीवन जीने का एक तरीका बन गई है। समूह के सदस्य न केवल नियमित रूप से वैदिक मंत्रों का जाप करते हैं, बल्कि उनका अध्ययन भी करते हैं और उनके अर्थ व सार पर चिंतन-मनन करते हैं।

भारत से लाई गई ऑडियो कैसेट और धर्मग्रंथों के माध्यम से सीखने की जो शुरुआत हुई थी, वह समय के साथ वेदों को गहराई से आत्मसात करने की प्रक्रिया में बदल गई है। आज यह समूह वैदिक मंत्रों का जाप करने के लिए डोमिनिकन रिपब्लिक के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करता है। उनका मानना है कि इन पवित्र मंत्रों के जाप से सकारात्मक और शक्तिशाली ऊर्जा का संचार होता है। समूह के अन्य सदस्यों में श्री लुईस टॉरेस, श्री एलियास पिलार्टे, सुश्री रोज़ा पोलान्को, सुश्री एस्पेरांज़ा, सुश्री यानेत् आमारो, सुश्री एना विटिनी आदि शामिल हैं।

"वेद सभी तरह के ज्ञान का स्रोत हैं। हमने जाना है कि वेद केवल हिंदू धर्म के ग्रंथ ही नहीं, बल्कि ये पूरी मानवता के लिए आध्यात्मिकता का स्रोत हैं। भारत और उन सभी महान आत्माओं का धन्यवाद, जिन्होंने सदियों से हम सबके लिए इन्हें संजोकर रखा है। जब हम वेदों के सम्पर्क में आए, तो हमने अपने भीतर झाँकना शुरू किया। हमारा मुख्य उद्देश्य केवल ध्वनि के एक खास स्तर पर सही ढंग से मंत्रों का उच्चारण करना नहीं था, बल्कि गहराई में जाकर उनके अर्थ को महसूस करना था। जैसा कि कहा जाता है – आपको मंत्र का तब तक जाप करना चाहिए, जब तक कि मंत्र ही आपका जाप न करने लगे।"

-सोनिया रॉड्रिगेस

"सच्चे अर्थों में बदलाव तक पहुँच पाना कोई आसान कार्य नहीं है, किंतु इसे आगे बढ़ाने में दृढ़ रहना वास्तव में मायने रखता है। हमारे गुरु के उपदेश, सही कार्य और प्रत्येक मनुष्य में उस प्रेम को पहचानने का प्रयास करना जो हम वास्तव में हैं, मूल रूप से वह है जो हमें उस बदलाव तक पहुँचने में मदद करता है।"

-यानेत् आमारो

"तब यह उतना आसान नहीं था। हमारे पास आज जितने संसाधन नहीं थे। लेकिन हमने लिखित सामग्री, छोटे कैसेट टेप से शुरुआत की जो हम भारत से लाए थे। हमने धीरे-धीरे, व्यावहारिक रूप से मंत्रों के श्रवण से शुरुआत की। जैसे-जैसे समय बीतता गया, हमें प्रशिक्षक मिलते गए और हमने धीरे-धीरे अपने उच्चारण के कई पहलुओं को अपनाया और उनमें सुधार किया। हम जो मंत्र सीख रहे थे उनका अर्थ भी हमें समझ में आ गया। धीरे-धीरे, हम अपना रास्ता खोज रहे हैं और इसे, हम जो कुछ भी हैं, उसका हिस्सा बना रहे हैं।"

-लुईस टॉरेस

"हमारे महान गुरु स्वामी की कृपा से हमने धीरे-धीरे 'रुद्रम' सीखा, जो खुद से अपने असली स्वरूप तक की यात्रा है। यह इंसान की पूरी आंतरिक यात्रा का वर्णन करता है। यह हममें से हर एक के भीतर मौजूद ईश्वर की स्तुति का एक गुंजन है। हम अभी 'अरुणप्रासन' भी सीख रहे हैं, जो सूक्ष्म से विराट तक, यानी पृथ्वी से स्वर्ग तक की यात्रा है। हमने श्री सूक्तम, दुर्गा सूक्तम, देवी सूक्तम, शिवोपासना और मंत्र पुष्पं भी सीखा है।"

-रोज़ा पोलान्को

हैली वार
मुखिया, सिएज गाँव, नोंगक्रोह सरदार
और पद्म श्री पुरस्कार विजेता (2026)

समय के साथ बढ़ता सेतु

मेघालय के जीवित जड़ों से बने पुल की प्रेरक कहानी

मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले में सोहरा (चेरापूंजी) के पास सिएज गाँव के हरे-भरे जंगलों के बीच प्रकृति की एक अद्भुत रचना को देखा जा सकता है। यह है 'लिविंग रूट ब्रिज', यानी जीवित जड़ों से बना पुल। कंक्रीट या स्टील से बने पुलों की तरह यह निर्जीव नहीं है, बल्कि एक जीवित पुल है। इसे रबर के पेड़ (फिकस इलास्टिका) की हवा में लटकने वाली जड़ों से बहुत सावधानी से उगाया और पोषित किया गया है। यह पुल पीढ़ियों से चले आ रहे स्थानीय ज्ञान, धैर्य और प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान को दर्शाता है।

खासी हिल्स के लोगों के लिए ये जीवित पुल सिर्फ पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र नहीं है। ये नदियों के आर-पार समुदायों को जोड़ने वाली जीवन रेखाएँ हैं, खासकर भारी मॉनसून के मौसम में। बाँस या लकड़ी के पुलों की तुलना में ये पुल अधिक ज्यादा मजबूत और टिकाऊ होते हैं; समय के साथ ये बढ़ते रहते हैं तथा और भी मजबूत होते जाते हैं। यही वजह है कि ये दुनिया भर में सतत इंजीनियरिंग (सस्टेनेबल इंजीनियरिंग) के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है।

मैं जब सिर्फ दस साल का था, तभी मैंने लिविंग रूट ब्रिज बनाना शुरू कर दिया था। मेरे पिता और दादाजी ने मुझे इस पारम्परिक कला को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने सबसे पहले मुझे बाँस और लकड़ी के लट्ठों का इस्तेमाल करके छोटे पुल बनाने के लिए कहा ताकि हमारे गाँव वाले आसानी से नदी पार कर सकें। लेकिन बाँस और लकड़ी तो एक समय के बाद सड़ जाते हैं। तब उन्होंने मुझे सिखाया कि रबर के पेड़ की जड़ों से एक मजबूत पुल बनाया जा सकता है। ऐसा पुल जो पीढ़ियों तक चलेगा। अपने बुजुर्गों से मिला यह सबक जल्दी ही मेरे जीवन का लक्ष्य बन गया।

सिएज गाँव में लिविंग रूट ब्रिज की धैर्यपूर्वक देखभाल करते हुए मुझे पचास वर्ष से भी अधिक समय हो गया है। यह पुल भी लगभग पचास साल पुराना है। हर साल इसकी जड़ें बढ़ती रहती हैं। मैं उन्हें दिशा देता हूँ, आपस में गूंथता हूँ और जोड़ता हूँ ताकि वे एक-दूसरे के साथ मिलकर बढ़ें। इसी तरह पुल मजबूत होता है। चूंकि यह जीवित है, इसलिए इसका काम अनवरत चलता रहता है।

लिविंग रूट ब्रिज बनाना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें जल्दबाजी नहीं की जा सकती। इसमें लगने वाला समय, नदी, जमीन की बनावट और जड़ों के प्राकृतिक विकास पर निर्भर करता है। कुछ पुलों को लोगों का सुरक्षित भार उठाने के लायक मजबूत बनने में कई दशक लग जाते हैं। कुछ पुल बड़े होते हैं, तो कुछ छोटे। इसे बनाने में कितना समय लगेगा, यह जगह पर निर्भर करता है। जड़ें कितनी तेजी से बढ़ेंगी, यह प्रकृति तय करती है। हमारी

ज़िम्मेदारी है कि हम धैर्य के साथ उन्हें सही दिशा दें और उनकी देखभाल करना कभी न छोड़ें।

इस सफर में मुझे अपने परिवार, दोस्तों और गाँव वालों से लगातार हिम्मत मिली। उन्होंने मुझे जड़ों को तब तक आकार देते रहने के लिए प्रोत्साहित किया जब तक कि वे एक असली पुल जैसी न दिखने लगें। उनके सहयोग से ही मुझे आगे बढ़ते रहने की ताकत मिलती है। कोई भी 'लिविंग रूट ब्रिज' (जीवित जड़ों से बना पुल) बना सकता है। बस जरूरत है तो धैर्य, ज़िम्मेदारी और पक्के इरादे की। काम को कभी भी बीच में नहीं छोड़ना चाहिए। अगर आप बीच में रुक जाते हैं, तो पुल अधूरा रह जाता है। यह ज्ञान ईश्वर का दिया हुआ उपहार है और इसे बचाकर रखना तथा आगे की पीढ़ियों तक पहुँचाना हमारा कर्तव्य है।

वर्षों से इस 'लिविंग रूट ब्रिज' ने पूरे भारत और दुनिया भर के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। जो पुल कभी सिर्फ गाँव वालों की सुविधा के लिए बनाया गया था, वह अब मेघालय की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का प्रतीक बन गया है। पर्यटक यह देखकर हैरान रह जाते हैं कि ये पुल बनाए नहीं जाते, बल्कि उगाए जाते हैं। ये पुल इस बात का जीता-जागता उदाहरण हैं कि लोग प्रकृति के विरुद्ध जाने के बजाय उसके साथ मिलकर कैसे काम कर सकते हैं।

इस पुल को देखने के लिए कई विशिष्ट मेहमान भी आते हैं, जिनमें

मेघालय के माननीय मुख्यमंत्री श्री कॉनराड के. संगमा और माननीय केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण शामिल हैं, जो 12 जुलाई, 2025 को यहाँ आई थीं।

जब मुझे पता चला कि मुझे 25 मई, 2026 को राष्ट्रपति भवन में भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से पद्म श्री पुरस्कार मिलेगा, तो मैं सचमुच हैरान रह गया। मैंने कभी नहीं सोचा था कि अपने गाँव के लिए चुपचाप किए गए काम को इतनी पहचान मिलेगी। मैं भारत सरकार का दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने मेरे काम का सम्मान किया और हमारे लोगों के पारम्परिक ज्ञान को मान्यता दी। मुझे उम्मीद है कि यह पुरस्कार युवाओं को हमारे पूर्वजों से सीखने और इन परम्पराओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करेगा। अगर हम आज इस ज्ञान को बचाकर रखेंगे, तो भविष्य में भी हमारे समाज को इसका लाभ मिलता रहेगा।

हमारे पुल पर आने के लिए सभी का स्वागत है। इस पर चलें, इसकी सुंदरता का आनंद लें और तस्वीरें लें। लेकिन मैं सभी से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि वे इस जीवित विरासत का सम्मान करें। कृपया जड़ों को न तोड़ें और न ही पेड़ों को नुकसान पहुँचाएँ। यह पुल जीवित है और तभी तक बना रहेगा जब तक हम इसकी देखभाल करते रहेंगे। मनुष्य और

प्रकृति को हमेशा एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए।

यह पुल हमें याद दिलाता है कि सच्चे राष्ट्र-निर्माण को हमेशा बड़े स्मारकों या विशाल बुनियादी ढाँचे से नहीं मापा जा सकता है। कभी-कभी इसकी शुरुआत चुपचाप एक आम नागरिक के धैर्यपूर्ण प्रयासों और हाथों से होती है। ऐसे नागरिक जो पूर्वजों की समझ से प्रेरित, आस्था से पोषित और अपने समुदाय की सेवा के लिए समर्पित होते हैं। ऐसी कहानियाँ हमें अपनी विरासत को संजोने, अपने पर्यावरण की रक्षा और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित करती हैं कि हमारे पूर्वजों की अमूल्य परम्पराएँ आने वाली पीढ़ियों के लिए फलती-फूलती रहें।

ब्यावरा का 'इको-ब्रिक्स' मॉडल

महिलाओं द्वारा एक स्थायी समाधान

हर नागरिक स्वच्छ गाँव और सुंदर शहर की कामना करता है। किंतु कुछ लोग ही यह जानने की कोशिश करते हैं कि उनके आसपास जमा कचरे को वास्तव में कौन साफ करता है। ज्यादातर लोग यही मानते हैं कि यह किसी और का काम है। मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के एक छोटे से कस्बे ब्यावरा में महिलाओं के एक समूह ने उस 'किसी और' का इंतजार न करने का फैसला किया। उन्होंने अपनी गलियों में बिखरा हुआ प्लास्टिक खुद उठाया और ऐसा करके, हाल के वर्षों में नागरिक स्वामित्व के सबसे प्रभावशाली जमीनी मॉडलों में से एक का निर्माण किया।

अनिल कुशवाहा,
अध्यक्ष, PPSS, ब्यावरा

पर्यावरण प्रेमी संरक्षण समिति के नेतृत्व में इस पहल की शुरुआत हुई। इस समिति के अध्यक्ष अनिल कुशवाहा के अनुसार, इसकी उत्पत्ति एक अप्रिय घटना से हुई। ब्यावरा में सड़क किनारे एक ढाबे के पास एक गाय को फेंकी हुई पॉलिथीन खाते देख उन्होंने खाली

पानी की बोतलों में प्लास्टिक की थैलियाँ भरना शुरू कर दिया और उन्हें 'इको-ब्रिक्स' में बदल दिया, जिसे अब यह समूह 'पर्यावरण-ईंट' कहता है। एक व्यक्ति की इस भयावह दृश्य पर प्रतिक्रिया के रूप में शुरू हुआ यह प्रयास जल्द ही दोस्तों, दुकानदारों और सबसे महत्त्वपूर्ण रूप से, महिला स्वयंसेवकों के बढ़ते समूह को आकर्षित करने लगा, जिन्होंने इस पहल को व्यापकता और स्थायित्व प्रदान किया। अगले कुछ महीनों में जनभागीदारी का यह मॉडल एक वास्तविक जन आंदोलन में परिवर्तित हो गया।

इस अभियान की रीढ़ महिलाओं का योगदान रहा है। अनिला गुजराती समिति में शामिल होने से पहले वर्षों तक चुपचाप घर पर पर्यावरण-अनुकूल ईंटें बनाती रही थीं। उन्होंने पाया कि जो काम वह अकेले पाँच वर्षों में नहीं कर पाईं, वह सामूहिक रूप से महिलाओं की भागीदारी संगठित होने के बाद टीम ने पाँच महीनों के भीतर ही कर दिखाया। अनिल कुशवाहा द्वारा समर्थन का अनुरोध किए जाने पर पिंकी विश्वकर्मा ने अपने घर से कचरा इकट्ठा करना शुरू किया। उन्होंने बस इतना

अनिला गुजराती, ब्यावरा

तृप्ति शर्मा, ब्यावरा

कहा, 'दीदी, यह कचरा है – हम इसे सबसे अच्छा बनाएँगे।' इसके बाद उन्होंने घर-घर जाकर अन्य महिलाओं को प्रेरित किया और उनसे प्लास्टिक को फेंकने के बजाय अलग रखने का आग्रह किया। पायल सेन, तृप्ति शर्मा और सुमन कुशवाहा ने भी इसी तरह की प्रक्रिया का वर्णन किया। घरेलू प्लास्टिक को कचरा न मानने के व्यक्तिगत निर्णय के बाद उन्होंने पड़ोसियों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। तृप्ति शर्मा तब समिति में शामिल हुईं जब उन्होंने एक स्थानीय कॉलेज और एक सरकारी कार्यालय के बाहर पर्यावरण-अनुकूल ईंटों से बने वृक्षारोपण स्थल देखे और इस प्रयास का श्रेय समिति को दिया।

इस अभियान को विरोध का भी सामना करना पड़ा। तरुण सेन और दीपक

सुमन कुशवाह, ब्यावरा

पिंकी विश्वकर्मा, ब्यावरा

साहू दोनों को याद है कि नालियों और सड़कों के किनारे से प्लास्टिक उठाते समय उनसे सवाल किए जाते थे और उनका मजाक उड़ाया जाता था। संदेह करने वाले पूछते थे कि ऐसे छोटे-मोटे प्रयासों से आखिर क्या हासिल हो सकता है। दीपक साहू बताते हैं कि कैसे वे और कुछ युवा स्वयंसेवक हर शाम अनिल कुशवाहा की पारिवारिक दुकान पर इकट्ठा होते थे और कस्बे के बस स्टैंड तक पैदल जाते थे, जहाँ बाहरी लोग अक्सर पानी की बोतलें फेंक देते थे। यह समूह बाजार क्षेत्र से इन बोतलों को इकट्ठा करता, वापस लाता और देर शाम तक उनमें प्लास्टिक की थैलियाँ भरता रहता था। स्वयंसेवकों ने अपना काम जारी रखा और इसे स्वच्छ भारत मिशन में एक छोटा, मगर सच्चा योगदान बताया। आज समिति को 300 से 350 परिवारों के साथ-साथ सहयोगी दुकानदारों और व्यापारियों का समर्थन मिल रहा है।

इस भागीदारी को संस्थागत रूप देने के लिए समिति ने ब्यावरा भर में विशेष प्लास्टिक बैंक और बोतल बैंक स्थापित किए हैं, जिससे निवासियों को कचरा फेंकने के बजाय उसे सौंपने का एक सरल और स्थायी माध्यम मिल गया है। स्थानीय स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं, ताकि शहर की युवा पीढ़ी तक कचरे को अलग करने और उसका पुनः इस्तेमाल करने का संदेश पहुँचाया जा सके। गृहिणियाँ अब पहले ही पॉलीथीन अलग करती हैं, व्यापारी अपने प्रतिष्ठानों से निकलने वाला प्लास्टिक समिति को सौंपते हैं और स्वयंसेवक कभी-कभार के बजाय प्रतिदिन समय देते हैं। इन क्रियाकलापों से अभियान को एक संस्था की तरह निरंतर गति मिलती है, न कि किसी एक बार के अभियान की तरह।

इसके ठोस परिणाम सराहनीय हैं। लगभग 240 किलोग्राम एकल-उपयोग प्लास्टिक का उपयोग करते हुए 700 से अधिक पर्यावरण-अनुकूल ईंटें तैयार की गई हैं, जबकि शहर से कुल मिलाकर 20 टन से अधिक प्लास्टिक और पुनर्चक्रण योग्य कचरा एकत्र किया गया है। इन सामग्रियों का उपयोग 'आई लव ब्यावरा' सेल्फी पॉइंट, वृक्षों के लिए क्यारियों, वृक्ष रक्षकों, बेंचों और कूड़ेदानों में किया गया है, जिससे ब्यावरा की सड़कों पर बिखरे कचरे को

पायल सेन, ब्यावरा

तरुण सेन, सचिव, पीपीएसएस, ब्यावरा

दीपक साहू, ब्यावरा

शहर के गौरव का प्रतीक बना दिया गया है। स्थानीय नगर निगम की मशीनरी के साथ काम करते हुए समिति ने रीसायकल किए गए पॉलीथीन को पीसकर और पिघलाकर वृक्ष रक्षक जाली और अन्य टिकाऊ उत्पाद बनाना भी शुरू कर दिया है। इस प्रकार यह पहल पर्यावरण-अनुकूल ईंटों से आगे बढ़कर अधिक व्यवस्थित रीसाइक्लिंग की ओर बढ़ रही है।

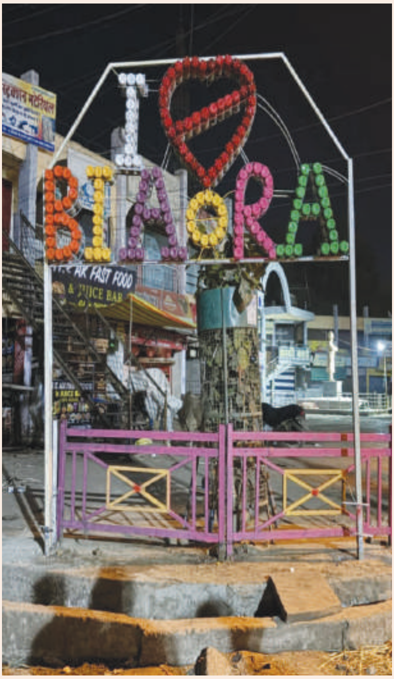

कभी शहर में प्रदूषण फैलाने वाला प्लास्टिक आज इन महिलाओं के प्रयासों से शहर की सुंदरता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। 28 जून, 2026 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 135वें एपिसोड में इस पहल पर प्रकाश डाला। उन्होंने ब्यावरा की बहनों और उनके सहयोगियों को इस पहल के लिए बधाई दी। इस पहल ने 'कचरे से कंचन' की अवधारणा को साकार कर दिया है, जिससे प्लास्टिक कचरे को एक उपयोगी संसाधन में परिवर्तित किया जा रहा है।

ब्यावरा के अनुभव की खासियत केवल सरल और सस्ती पर्यावरण-अनुकूल ईंटों की तकनीक तक सीमित नहीं है, बल्कि वह तरीका है जिससे महिलाओं ने घरेलू झंझट को नागरिक परिवर्तन के साधन में बदल दिया। प्लास्टिक के निपटान को एक साझा, दृश्यमान और सम्मानजनक गतिविधि बनाकर, पर्यावरण प्रेमी संरक्षण समिति ने दिखाया है कि कैसे राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त महिला नेतृत्व वाली स्थानीय पहल, स्वच्छ और हरित भविष्य की राह तलाश रहे अन्य शहरों के लिए एक आदर्श बन सकती है।

इस गणेश उत्सव में 'वोकल फॉर लोकल'

गणेश उत्सव जैसे-जैसे नजदीक आता है, महीनों पहले से ही तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। साथ ही, एक जरूरी फैसला भी लेना होता है कि इस साल हमारे घरों और पंडालों में कौन-सी मूर्ति विराजेगी?

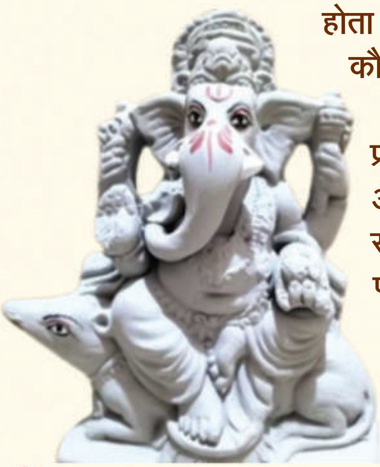

हाल ही में 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने लोगों से भारतीय मिट्टी से बनी और स्थानीय कुम्हारों और कारीगरों के हाथों से तैयार मूर्तियों को ही चुनने की अपील की है। प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी मूर्तियों से भिन्न, मिट्टी की मूर्तियाँ पूजा-पाठ के बाद पानी में प्राकृतिक रूप से घुल जाती हैं। इससे हमारी नदियाँ और तालाब प्रदूषण से बचे रहते हैं।

यह फैसला सिर्फ पर्यावरण से जुड़ा नहीं है। स्थानीय कारीगर से खरीदी गई मिट्टी की हर मूर्ति किसी की आजीविका में मदद करती है, पारम्परिक कला को जिंदा रखती है और 'वोकल फॉर लोकल' की भावना को दर्शाती है।

इस गणेश उत्सव में बप्पा को घर लाने से पहले जरा रुककर यह जरूर पूछें: यह मूर्ति किस चीज से बनी है और इसे किन हाथों ने बनाया है? एक छोटा-सा सवाल, लेकिन इसमें आस्था और प्रकृति, दोनों की रक्षा करने की ताकत है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

139वाँ संस्करण

मेरा आप सभी से आग्रह है कि अपने परिवार में इन योजनाओं [प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना] की जानकारी जरूर साझा करें।

आप प्रयास करें कि आपके घर, सोसायटी या आसपास की जगहों पर गणपति बप्पा की जो मूर्ति स्थापित हो, वो हमारे देश की मिट्टी से बनी हो, वो हमारे अपने कुम्हारों और स्थानीय कलाकारों के हाथों तैयार हुई हो।

जलसंचय तो करना-ही-करना है। बारिश के पानी की एक-एक बूँद को हमें बचाना है। '**Catch the Rain**' ये अभियान जरा भी ढीला नहीं होने देना है। तो मेरा खास आग्रह है, वर्षा का बूँद-बूँद पानी, हम मिल करके बचाएँ।

Bhupender Yadav
@byadavbjp

Show translation
राजगढ़ में पिछले कुछ महीनों में सैकड़ों किलो plastic को recycle करके उनका बेहतर उपयोग किया गया है। यानी, जो plastic पहले शहर में प्रदूषण फैलाता था, आज वही इन बहनों के प्रयास से शहर की सुंदरता बढ़ाने में योगदान दे रहा है।

#MannKiBaat

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

Show translation
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा Artificial Intelligence और Data Science जैसे आधुनिक क्षेत्रों में B.Tech की शुरुआत एक दूरदर्शी कदम है।

यह पहल भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा और नई तकनीक के संगम को मजबूत करेगी, जिससे भारतीय भाषाओं के लिए नए AI समाधान विकसित करने और प्राचीन ग्रंथों व पांडुलिपियों के संरक्षण को नई दिशा मिलेगी।

परंपरा और तकनीक का यह मेल ज्ञान के भविष्य को और समृद्ध बनाएगा।

#MannKiBaat

G Kishan Reddy
@kishanreddybjp

Tuned into Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi Ji's 135th episode of Mann Ki Baat along with the residents of Boudha Nagar, Hyderabad.

The Hon'ble Prime Minister's address was a reminder of the many inspiring initiatives shaping India's progress.

PM Modi highlighted the commendable efforts of Nalanda University in reconnecting India's ancient tradition of 'Shaastraarth' with the needs of the modern world, reviving a rich legacy of dialogue and intellectual exchange.

Hon'ble PM also spoke about the transformative impact of grassroots sporting initiatives that are empowering young talent across the country, while also emphasising how affordable social security schemes are providing families with financial protection and much-needed support during challenging times.

As Ganesh Utsav approaches, the Prime Minister urged citizens to celebrate responsibly by choosing eco-friendly clay idols crafted by local artisans, promoting both environmental sustainability and the livelihoods of our traditional craftsmen.

This episode of #MannKiBaat reflected a vision of an India that values its heritage, nurtures its youth, strengthens social security, and embraces sustainable practices for a brighter future.

Giriraj Singh
@girirajsinghbjp

Show translation
मन की बात: पीएम मोदी ने एविएशन और डिफेंस सेक्टर की आत्मनिर्भरता की सराहना की, बोले - 'आत्मनिर्भर भारत' अब हकीकत
moneycontrol.com/news/india/man...

via NaMo App

मन की बात: पीएम मोदी ने एविएशन और डिफेंस सेक्टर की आत्मनिर्भरता की सराहना की, बोले - 'आत्मनिर्भर भारत' अब हकीकत

MONEY CONTROL JUNE 29, 2026

पीएम मोदी ने 'मन की बात' के हालिया एपिसोड में डिफेंस और एविएशन सेक्टर में भारत की तरक्की का जिक्र करते हुए कहा कि देश की आत्मनिर्भरता की कोशिशों के साफ नतीजे दिख रहे हैं। उन्होंने भारत की बढ़ती मैन्युफैक्चरिंग और डिफेंस क्षमताओं के उदाहरण के तौर पर देश में बने पहले C-295 एयरक्राफ्ट, स्वदेशी नेवल प्लेटफॉर्म और देश में विकसित मिसाइल सिस्टम जैसी उपलब्धियों का जिक्र किया।

Hardeep Singh Puri
@HardeepSPuri

Another Jan Andolan takes shape!
In the 135th edition of the unique #MannKiBaat program today, PM Sh @narendramodi Ji thanked the citizens for wholeheartedly responding to his appeal to curtail the use of petrol and diesel, using public transport where possible, using carpooling, and curtailing gold purchases.

Measures such as these are helping the nation conserve energy, saving on the energy import bill and overcoming the challenges arising out of the military conflict, involving many energy producing nations, that has impacted global supply chains.

The huge support from the citizens to PM's clarion call has also enabled India to maintain a steady flow of energy products at retail outlets and face the difficult phase with minimal price adjustments.

@PMOIndia @mannkibaat @narendramodi_in @modiarchive @themodistory @PIB_India @PetroleumMin @mygovindia @transformIndia @MIB_India @MEAIndia

Nitin Nabin
@NitinNabin

Show translation
आज नई दिल्ली स्थित अपने आवास पर आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के 'मन की बात' कार्यक्रम के 135वें संस्करण को भाजपा मुख्यालय एवं दिल्ली प्रदेश कार्यालय के कर्मचारियों के साथ सुना।

प्रधानमंत्री जी ने इस अवसर पर आत्मनिर्भर भारत की बढ़ती शक्ति, स्वदेशी रक्षा एवं विमानन क्षेत्र की उपलब्धियों, योग की वैश्विक प्रतिष्ठा, पर्यावरण संरक्षण, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा वोकल फॉर लोकल जैसे विषयों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में जनभागीदारी के महत्व को रेखांकित किया।

'मन की बात' देशवासियों के साथ प्रधानमंत्री जी के आत्मीय संवाद का ऐसा सशक्त माध्यम बन चुका है, जो समाज के प्रेरणादायी प्रयासों को नई पहचान देता है और प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रहित में सकारात्मक योगदान के लिए निरंतर प्रेरित करता है।

Dr Mansukh Mandaviya
@mansukhmandviya

Show translation

नागालैंड की Women Futsal League हमारी बेटियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अच्छा अवसर दे रही है।

-पीएम श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Ministry of Education
@EduMinOfIndia

Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi, in today's "Mann Ki Baat", highlighted the launch of the B.Tech. programme in Artificial Intelligence & Data Science at Central Sanskrit University as a significant step towards preparing youth for emerging technologies while keeping them connected to India's rich heritage.

The Prime Minister noted that the programme will integrate modern technology with India's traditional knowledge systems, support the development of AI tools for Indian languages, and accelerate the digitisation and preservation of ancient texts and manuscripts. He also conveyed his best wishes to Central Sanskrit University for this pioneering initiative.

#MannKiBaat #NEP2020 #CentralSanskritUniversity #IndianKnowledgeSystems

Yogi Adityanath
@myogiadityanath

Show translation

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने आज @mannkibaat कार्यक्रम में आगामी गणेशोत्सव के दृष्टिगत देश वासियों से पर्यावरण संरक्षण, 'वोकल फॉर लोकल' और स्वदेशी के प्रति प्रेरक आह्वान किया है।

प्रधानमंत्री जी ने प्लास्टर ऑफ पेरिस (PoP) के स्थान पर 'देश की मिट्टी' से निर्मित भगवान श्री गणेश की मूर्तियों को अपनाने तथा स्थानीय कुम्हारों एवं शिल्पकारों द्वारा निर्मित प्रतिमाओं को प्राथमिकता देने की अपील कर 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को जन-जन से जोड़ने का कार्य किया है।

आइए, हम सभी इस गणेशोत्सव को पर्यावरण-अनुकूल, स्वदेशी और जनभागीदारी से परिपूर्ण उत्सव बनाने का संकल्प लें।

Nitin Gadkari
@nitin_gadkari

Show translation

आप प्रयास करें कि आपके घर, सोसायटी या आसपास की जगहों पर गणपति बप्पा की जो मूर्ति स्थापित हो, वो हमारे देश की मिट्टी से बनी हो, वो हमारे अपने कुम्हारों और स्थानीय कलाकारों के हाथों तैयार हुई हो। जो लोग गणेश जी की मूर्तियां बनाते हैं, उनसे भी मेरा आग्रह है कि वे मिट्टी की मूर्तियों को प्राथमिकता दें, और जो लोग मूर्तियां खरीदते हैं, वे भी यह जरूर देखें, कि, गणपति बप्पा की मूर्ति किससे बनी है और किस देश में तैयार हुई है। Plaster of Paris से बनी मूर्तियां बिल्कुल ना खरीदें। साथियो, मिट्टी की मूर्तियां पूजा के बाद सहज रूप से पानी में विलीन हो जाती हैं। इससे हमारी नदियां, तालाबों और पर्यावरण की रक्षा होती है। हमारी आस्था भी बनी रहती है और प्रकृति के प्रति हमारा दायित्व भी पूरा होता है। जब हम स्थानीय कारीगरों से मूर्ति खरीदते हैं, हम '#VocalforLocal' के संकल्प को मजबूत करते हैं। मुझे विश्वास है कि इस बार 'गणेश उत्सव' में और ऐसे हर उत्सव में हम ऐसी सारी बातों पर जरूर गंभीरता से सोचेंगे और देश-हित में कदम भी उठाएंगे। - प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

Show translation

महाराष्ट्र के नांदेड़ में एक परिवार ने अपनी खुशियां बांटने के लिए ऐसा काम किया है, जो चर्चा का विषय बन गया है।

यहां के बहादुरपुरा गांव में पेठकर परिवार ने अपने घर में विवाह के अवसर पर गांव के लगभग 3,500 लोगों के लिए दुर्घटना बीमा की व्यवस्था की। हर व्यक्ति को एक लाख रुपए का बीमा कवर दिया गया।

#MannKiBaat

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

Show translation

मुझे मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के ब्यावरा की कुछ बहनों के बारे में जानने का अवसर मिला। उन्होंने अपने आस-पास फैले plastic कचरे को हटाने का संकल्प लिया। ये नहीं सोचा कि कोई आकर बदलाव लाएगा।

उन्होंने खुद शहर-भर से plastic कचरा और खाली बोतलें इकट्ठा करना शुरू किया। धीरे-धीरे ये प्रयास आगे बढ़ता गया औरफिर उस plastic को eco-bricks में बदला जाने लगा।

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

पीएम मोदी ने मन की बात पर नागालैंड के फुटबॉल लीगों की तारीफ की

एजेंसी । नई दिल्ली

विश्व योगासन चैम्पियनशिप का भी किया जिक्र

'मन की बात' में गूंजी मप्र के ब्यावरा की पर्यावरण क्रांति, प्रधानमंत्री ने बहनों के प्रयासों को सराहा

प्रधानमंत्री मोदी बोले- प्लास्टिक कचरे से सार्वजनिक स्थानों को बनाया सुंदर

आखिर क्या है यह अभियान

'मन की बात' में मोदी ने प्रकृति और आस्था के समन्वय पर जोर देते हुए की अपील

त्योहारों में मिट्टी की मूर्तियां खरीदें

Mann Ki Baat: PM hails India's defence self-reliance

PIONEER NEWS SERVICE
New Delhi

Underlining the country's march towards self-reliance, Prime Minister Narendra Modi on Sunday highlighted several milestones achieved by India, citing the maiden flight of the made-in-India C-295 aircraft and the successful test of the indigenous Long-Range Land-Attack Cruise Missile.

Making this assertion during his monthly radio broadcast 'Mann Ki Baat', he also noted that in June itself, the country has achieved a major success in the aviation sector.

Stating that the C-295 aircraft has been made in India, he said, "As many as 40 such aircraft are being built right here in India, and this is giving new strength to MSMEs and the aerospace sector". It will also increase employment opportunities, he noted. The first made-in-India C-295 military transport aircraft successfully completed its maiden flight on June 10. The IAF is procuring 56 C-295 transport aircraft at a cost of around Rs 21,935 crore. Forty of these aircraft will be assembled by Tata Advanced Systems Limited in cooperation with Airbus at a production facility in Vadodara.

Modi said in June that the country achieved some other milestones that fill every citizen with pride. "Recently, I got the opportunity to participate in a Navy-related programme in Kolkata. There, INS Dunagiri, INS Shanshak and INS Agrya were inducted into the Indian Navy's fleet. From the design to the manufacturing of these ships, everything is indigenous," he said.

The prime minister said in June that the Defence Research and Development

Organisation (DRDO) also successfully tested an indigenous Long-Range Land-Attack Cruise Missile (LRLACM).

"In other words, from the seas to the skies, our India is becoming increasingly secure and self-reliant," he said.

The DRDO on June 15 conducted a successful flight-test of the LRLACM off the coast of Odisha. The LRLACM is an indigenously built missile with all sub-systems developed by various DRDO laboratories and industry partners.

During the broadcast, Modi also thanked citizens for heeding his appeal to avoid buying gold for some time, holidaying abroad and opting for carpooling in view of the West Asia situation.

"I am grateful to every citizen of the country; not only have they supported my appeal, but they are also actively cooperating in every way," he said.

The prime minister said he had also requested farmers to adopt chemical-free farming, protect their farmlands, and maximise the use of natural fertilisers.

Referring to an initiative to prepare the youth for new technology while keeping them rooted in their heritage, he said the Central Sanskrit University in Delhi is launching a B.Tech program in Artificial Intelligence and Data Science. "This marks a crucial step towards integrating modern technology with India's traditional knowledge," he said.

Modi said Indian culture is reaching various corners of the globe, noting that in the Dominican Republic, where the Indian population is just around 100, a team has been formed by some Spanish-speaking locals who have named it "Brahmakamal Dominicana."

"The members study Vedic literature together and are learning to chant Vedic mantras. They have received no formal training on this, but they have learnt the correct pronunciation by listening to audio recordings," he said.

The prime minister also spoke about the superstition surrounding the Hargila bird in Assam, which plays a vital role in keeping nature clean.

"Hargila was considered inauspicious in certain parts of Assam and trees housing Hargila nests were even cut down," he said, adding that biologist Purnima Devi Barman witnessed this and resolved to change the misconceptions deeply rooted in people's minds.

मन की बात कार्यक्रम में बोले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

भारत वैश्विक संकट का डटकर मुकाबला कर रहा

पूरी दुनिया भारत के प्रयासों से जुड़ी

સંરક્ષણથી યોગ સુધી ગણાવી મોટી સફળતાઓ

'મન કી બાત'માં વડાપ્રધાન મોદીનું આત્મનિર્ભર ભારત પર ફોકસ

मन की बात में बोले मोदी

भारत समुद्र से आकाश तक सुरक्षित आसमान में गरज रहे स्वदेशी विमान

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने देश की आत्मनिर्भरता की राह में कुछ बड़ी उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा भारत समुद्र से लेकर आकाश तक सुरक्षित है। आज आसमान में भारत के स्वदेशी निर्मित लड़ाकू विमान गरज रहे हैं जिन्हें देखकर पूरी दुनिया में भारत के विकास की चर्चा हो रही है। मोदी ने भारत में बने सी-295 ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट की पहली उड़ान और [illegible] सी-295 विमान ने अपनी पहली सफल उड़ान पूरी कर ली है। आसमान में ऐसे 40 विमान भारत में ही बनाए जा रहे हैं।

तीन भारतीय जहाजों की सराहना की

[illegible]

पीएम सुरक्षा बीमा योजना का लाभ उठाएं

[illegible]

मेरी अपील का समर्थन व सहयोग किया

[illegible]

अशुभ हरगिला पक्षी अब गांव की पहचान बना

[illegible]

मेघालय: रूट ब्रिज की कहानी

[illegible]

मन की बात: प्रधानमन्त्रीले स्वदेशी रक्षा क्षमतादेखि सामाजिक परिवर्तनसम्मका उपलब्धिहरूको चर्चा गरे

[illegible]

నింగి నుంచి నీటి దాకా భారత్ భద్రం

[illegible]

'समुद्रापासून आकाशापर्यंत देश आत्मनिर्भर'

वृत्तसंस्था, नवी दिल्ली

देश आत्मनिर्भर होण्याच्या दिशेने गाठलेल्या अनेक महत्त्वपूर्ण टप्प्यांचा उल्लेख पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी रविवारी 'मन की बात' या आपल्या मासिक रेडिओ कार्यक्रमात केला.

देशात तयार करण्यात आलेल्या सी-२९५ विमानाच्या पहिल्या उड्डाणाचा आणि स्वदेशी लांब पल्ल्याच्या क्रूझ क्षेपणास्त्राच्या यशस्वी चाचणीचा, तसेच स्वदेशी युद्धनौकांचा विशेष उल्लेख करीत त्यांनी समुद्रापासून आकाशापर्यंत देश अधिकाधिक आत्मनिर्भर होत असल्याचे नमूद केले. जून महिन्यातच देशाने विमानवाहतूक क्षेत्रात मोठे यश संपादन केल्याचे मोदींनी सांगितले. सी-२९५ विमान भारतात तयार करण्यात आले असल्याचे सांगताना ते म्हणाले, 'अशी ४० विमाने भारतातच तयार होत आहेत.

'मन की बात'मध्ये पंतप्रधान मोदी यांचे प्रतिपादन

पेठकर कुटुंबाचा उल्लेख

महाराष्ट्रातील नांदेड जिल्ह्यातील पेठकर कुटुंबाचा उल्लेख पंतप्रधानांनी 'मन की बात'मध्ये केला. पेठकर कुटुंबाने लग्नसमारंभाच्या निमित्ताने सुमारे ३,५०० पाहुण्यांना अपघाती विमा काढून दिला. 'सामाजिक भावना अंतर्मनास स्पर्शून जाणारी आहे,' असे मोदी म्हणाले.

पंतप्रधान म्हणाले...

- शेतकऱ्यांना रसायनमुक्त शेती स्वीकारावी. शेतजमिनीचे संरक्षण करावे. नैसर्गिक खतांचा जास्तीत जास्त वापर करावा.
- दिल्लीतील केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठात 'एआय' आणि 'डेटा सायन्स'मधील बी. टेक अभ्यासक्रम सुरू करण्यात येत आहे.
- आधुनिक तंत्रज्ञान आणि भारताच्या पारंपरिक ज्ञानाचा संगम घडवण्याच्या दिशेने हे महत्त्वाचे पाऊल आहे.
- मेघालयातील 'रूट ब्रिजेस'चा जागतिक वारसा स्थळांच्या यादीत समावेश करण्यासाठी प्रस्ताव दिला आहे.
- आपल्या घरात, सोसायटीत किंवा परिसरात बसवली जाणारी गणपती बाप्पांची मूर्ती आपल्या देशातील मातीपासून आणि आपल्या स्थानिक कुंभार व कारागिरांच्या हातांनी तयार केलेली असावी.

سمندر سے آسمان تک بھارت تیزی سے خود انحصاری کی جانب گامزن / وزیر اعظم

[illegible]

प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात कार्यक्रम के 135 वें संस्करण का प्रसारण

मन की बात में गूंजी ब्यावरा की पर्यावरण क्रांति व प्लास्टिक मुक्त अभियान

- मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों के साथ सुना 'मन की बात' कार्यक्रम
- कचरे से सृजन की मिसाल, जनभागीदारी से जन आंदोलन तक
- बहनों ने प्लास्टिक कचरे को बनाया विकास का आधार

[illegible]

बहनों के प्रयासों से शहर की सुंदरता बढ़ाने में अहम योगदान

[illegible]

नालंदा विश्वविद्यालय ने शास्त्रार्थ की परंपरा को जीवित किया

मन की बात के 135वें एपिसोड में बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने रविवार (28 जून) को देश के लोगों से मन की बात की। इस दौरान उन्होंने देश के लोगों से सोना न खरीदने को लेकर शुक्रिया कहा। पीएम ने देशवासियों से सोना न खरीदने की अपील की थी और देश के लोगों ने उनकी बात सुनी। इसके लिए उन्होंने सभी को धन्यवाद कहा। मन की बात के 135वें एपिसोड में उन्होंने अंधविश्वास से दूर रहने की सलाह दी। उन्होंने नॉर्थ ईस्ट के राज्यों में पाए जाने वाले एक पक्षी के बारे में भी बताया, जिसे पहले अशुभ माना जाता था, लेकिन वहां की महिलाएं इस पक्षी को बचाने की पहल में जुटी हुई हैं। पीएम ने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय ने शास्त्रार्थ की परंपरा को जीवित किया है। नालंदा विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शास्त्रार्थ की परंपरा शुरू की गई है। प्रधानमंत्री ने कहा, इसाल 2026 का आधा हिस्सा खत्म होने वाला है। इन छह महीनों में, हमने मन की बात में अपने देशवासियों की कई कामयाबियों पर बात की है। जून में भी, देश ने कुछ ऐसी कामयाबियां हासिल की हैं जिनसे हर नागरिक को गर्व है। ये कामयाबियां देश की सुरक्षा और आत्मनिर्भरता से जुड़ी हैं। उन्होंने डिफेंस सेक्टर में देश की आत्मनिर्भरता का जिक्र किया और बताया कि हाल ही में आईएनएस दुनागिरि, आईएनएस संशोधक और संशोधक आदि की डिजाइन से लेकर मैन्युफैक्चरिंग तक सब कुछ स्वदेशी है। उन्होंने जून में डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन द्वारा स्वदेशी लॉन्ग-रेंज लैंड-अटैक क्रूज मिसाइल के सफल टेस्ट को भारत के डिफेंस सेक्टर के लिए एक और अहम मील का पत्थर बताया।

Swadeshi is India's greatest strength: PM Modi in Mann ki Baat

NEW DELHI, JUN 28: Prime Minister Narendra Modi on Sunday underscored India's growing self-reliance in defence manufacturing and indigenous innovation, asserting that the country's greatest strength lies in Swadeshi and that the march towards Aatmanirbhar Bharat is steadily gathering momentum with active public participation.

In the 135th edition of his monthly radio programme Mann Ki Baat, Modi reflected on the achievements of the first half of 2026, saying the country had registered significant progress in defence, technology, sports, culture, environmental conservation and social welfare.

Highlighting recent milestones in indigenous defence production, the Prime Minister said the induction of INS Dunagiri, INS Sanshodhak and INS Agray into the Indian Navy

represented a landmark achievement for India's domestic shipbuilding capability.

"Everything-from the design to the manufacturing of these ships-is indigenous," Modi said, adding that the country's security architecture was becoming stronger through home-grown technology and manufacturing.

He also cited the maiden flight of the Made-in-India C-295 transport aircraft, noting that 40 such aircrafts were currently being manufactured in the country. According to Modi, the project is creating employment, boosting the MSME and aerospace sectors, and strengthening India's self-reliance in aviation.

The Prime Minister further welcomed the successful test of the indigenous long-range land-attack cruise missile developed jointly by the Defence Research and Development Organisation (DRDO) and Indian industry partners.

"From the seas to the skies, our India is becoming increasingly secure and self-reliant," he said.

’من کی بات‘ میں وزیر اعظم کی ٹیکنالوجی، معیشت اور ماحولیات پر جامع گفتگو

عوامی شراکت داری ملک کی تعمیر کی سب سے بڑی طاقت

سمندر سے لے کر آسمان تک ہندوستان زیادہ مضبوط اور ’آتم نربھر‘ بن رہا ہے/ مودی

نئی دہلی، 28 جون/ مانیٹرنگ/

وزیر اعظم نریندر مودی نے عوامی شراکت داری کو کسی بھی ملک کی سب سے بڑی طاقت بتاتے ہوئے کہا ہے کہ جب ہم وطن کسی عزم کے ساتھ آگے بڑھتے ہیں تو کوئی بھی طاقت انہیں اپنے ہدف سے ہٹا نہیں سکتی۔ وزیر اعظم نے مغربی ایشیا میں پیدا ہونے والے بحران کے دوران اپنی اپیلوں پر ہم وطنوں کی سرگرم شراکت داری پر خوشی کا اظہار کرتے ہوئے کہا کہ لوگوں نے جس طرح تعاون کیا، وہ ملک کی تعمیر میں عوامی شراکت داری کی طاقت کی ایک مضبوط مثال ہے۔ وزیر اعظم مودی نے اتوار کو آکاش وانی سے نشر ہونے والے اپنے ماہانہ پروگرام ’من کی بات‘ کی 135 ویں کڑی میں کہا کہ قوم کی تعمیر/ 108

मन की बात: सुरक्षा से लेकर स्वदेशी सी-295 विमान तक, पीएम मोदी ने गिनाईं उपलब्धियां

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम के 135वें एपिसोड के जरिए देश को संबोधित करते हुए, भारत की बढ़ती सामरिक और स्वदेशी ताकत का लोहा माना है। डीआरडीओ द्वारा इसी महीने किए गए स्वदेशी लॉन्ग रेंज लैंड अटैक क्रूज मिसाइल के सफल परीक्षण का जिक्र करते हुए उन्होंने साफ कहा कि आज भारत समंदर की गहराइयों से लेकर आसमान की ऊंचाइयों तक पूरी तरह सुरक्षित है। जून के महीने में ही एविएशन सेक्टर ने भी एक बेहद ऐतिहासिक मुकाम हासिल कर लिया है।

'मेड इन इंडिया' मिशन के तहत तैयार हुए ए-295 सैन्य परिवहन विमान ने अपनी पहली सफल उड़ान को अंजाम दे दिया है। आत्मनिर्भरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वर्तमान में ऐसे 40 विमानों का निर्माण सीधे भारत की धरती पर ही तेजी से किया जा रहा है। अहमदाबाद की धरती पर आयोजित हुई 'विश्व योगासन चैम्पियनशिप' में भारतीय एथलीटों ने इतिहास रचते हुए कुल 114 मेडल अपने नाम किए हैं। इस ऐतिहासिक प्रदर्शन में 102 चमचमाते गोल्ड मेडल शामिल हैं जिसकी बदौलत भारत पदक तालिका में शीर्ष स्थान पर काबिज रहा। दुनिया भर में 2500 से ज्यादा जगहों पर योग के कार्यक्रम आयोजित हुए।

- आसमान से समंदर तक भारत सुरक्षित, डीआरडीओ की क्रूज मिसाइल का परीक्षण सफल
- देश में ही बन रहे 40 सी-295 विमान, मेड इन इंडिया अभियान को मिली बड़ी रफ्तार

लोगों ने मेरी हर अपील का समर्थन किया

आर्थिक मोर्चे पर देशवासियों के सहयोग की सराहना करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि सोना न खरीदने, विदेशी यात्राएं टालने और कार पूलिंग करने की उनकी अपील का जनता ने खुलकर समर्थन किया है। विवाह जैसे बड़े पारिवारिक आयोजनों में भी लोग अब नया सोना खरीदने के बजाय पुराने रखे सोने से ही रीसाइकल कर काम चला रहे हैं। पीएम मोदी ने पूर्वोत्तर भारत के तीन राज्यों असम, मेघालय और नगालैंड की उन जमीनी कहानियों को दुनिया के सामने रखा जिन्होंने समाज में बदलाव की नई इबारत लिखी है। असम के भीतर कभी अशुभ माने जाने वाले दुर्लभ 'हरगिला' पक्षी को बचाने के लिए जीव-वैज्ञानिक पूर्णिमा देवी बर्मन ने ग्रामीण महिलाओं को एकजुट कर अंधविश्वास के खिलाफ जंग छेड़ दी। आज हजारों महिलाओं की यह 'हरगिला आर्मी' पर्यावरण संरक्षण का सबसे बड़ा प्रतीक बन चुकी है।

135TH MANN KI BAAT ADDRESS

PM: From seas to skies, India is becoming secure & self-reliant

Says grateful to citizens for supporting appeal for austerity amid West Asia crisis

Express News Service

Boost to strategic ties as Modi meets Mauritius PM in Seychelles

Express News Service

"We discussed ways to strengthen the India-Mauritius partnership. The progress being made across every area of our Enhanced Strategic Partnership is a matter of satisfaction for us."

मन की बात | पीएम मोदी ने सैन्य क्षेत्र से जुड़ी देश की कई उपलब्धियों का किया जिक्र

समुद्र से लेकर आसमान तक आत्मनिर्भर हो रहा भारत

- प्रकृति और आस्था के समन्वय पर जोर देते हुए त्योहारों में मिट्टी की मूर्तियां खरीदने की अपील
- सोना नहीं खरीदने, विदेश यात्रा से बचने व कार पूलिंग की अपील पर लोगों के सहयोग को सराहा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी • फाइल फोटो

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रक्षा क्षेत्र की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए रविवार को कहा कि समुद्र से लेकर आकाश तक देश अधिक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बन रहा है। इस महीने भारत ने कई ऐसी उपलब्धियां हासिल की हैं, जिन पर हर देशवासी को गर्व है। 'मन की बात' के 135वें संस्करण में पीएम ने कहा कि भारत में बने पहले सी-295 सैन्य परिवहन विमान ने 10 जून को अपनी पहली उड़ान सफलतापूर्वक पूरी की। ऐसे 40 विमान भारत में बनाए जा रहे हैं। हाल ही में आइएनएस दूनागिरी, आइएनएस संशोधक और आइएनएस अग्रय को नौसेना के बेड़े में शामिल किया गया। इन युद्धपोतों की डिजाइन से लेकर निर्माण तक सब कुछ स्वदेशी है। इसी महीने डीआरडीओ ने लंबी दूरी की स्वदेशी लैंड-अटैक क्रूज मिसाइल का सफल परीक्षण किया है।

गणेश उत्सव और उसके बाद आने वाले त्योहारों से पहले पीएम मोदी ने लोगों से मिट्टी की मूर्तियां खरीदने की अपील है। आस्था और प्रकृति के बीच समन्वय पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि स्थानीय कारीगरों से मूर्ति खरीदने से वोकल फार लोकल का संकल्प मजबूत होता है। प्रधानमंत्री ने प्लास्टर आफ पेरिस से बनी मूर्तियों को प्रकृति के लिए नुकसानदेह बताते हुए उन्हें बिल्कुल नहीं खरीदने की अपील की। त्योहारों के दौरान बड़े पैमाने पर चीन में बनी प्लास्टर आफ पेरिस की मूर्तियों की बिक्री को देखते हुए प्रधानमंत्री की इस अपील को अहम माना जा रहा है। प्रधानमंत्री ने पश्चिम एशिया संकट के दौरान विदेश यात्रा कम करने, एक साल तक सोना नहीं खरीदने और कार पूलिंग की अपील पर अमल करने के लिए लोगों का आभार जताया। कहा कि लोगों ने न केवल मेरी अपील का समर्थन किया है, बल्कि हर तरह से सक्रिय सहयोग भी कर रहे हैं।

من کی بات

وزیراعظم نے ناگالینڈ فٹبال لیگ کی تعریف کی

[illegible]

PM Modi highlights Meghalaya's living root bridges in 'Mann Ki Baat'

[illegible]

PM highlights Assam biologist's conservation bid in Mann Ki Baat

Mukut.Das@timesofindia.com

Guwahati: Assam biologist Purnima Devi Barman's fight to save the 'Hargila' gained the spotlight in PM Narendra Modi's Mann Ki Baat on Sunday.

In the 135th episode, Modi highlighted Barman's conservation work on the greater adjutant stork.

The PM said, "A bird is found in Assam known as the 'Hargila'. The 'Hargila' is a rare bird. It plays a vital role in keeping nature clean. However, for a long time, it was considered inauspicious in certain parts of Assam. People disliked seeing it in their vicinity. Often, trees housing nests were cut down..."

PTI

Storks help in keeping nature clean

"It was during that time that biologist Purnima Devi Barman witnessed it all. She resolved to change the misconceptions deeply rooted in people's minds. She spoke to women and explained the facts based on science; gradually, women began joining this campaign," he added.

"Today, I am so honoured and deeply humbled that our PM mentioned our work in such a great way. It is a recognition of all community-led conservation," Barman said.

CM Himanta Biswa Sarma said the bird was long seen as bad luck until Barman's community mission gained ground.

PM hails Meghalaya for upkeep of root bridges

Shillong: PM Modi praised the people of Meghalaya for preserving the living root bridges, calling them a symbol of harmony between humans and nature, **reports Manosh Das.**

ANI NEWS

Government is extending protective shield of insurance to crores of families: PM Modi in 'Mann Ki Baat'

दैनिक भास्कर

मोदी बोले- भारत समुद्र से आकाश तक सुरक्षित: देश में 40 से ज्यादा C-295 विमान बनाए जा रहे, योग में भारत ने 114 पदक जीते

DH DECCAN HERALD

Mann Ki Baat: From missiles to manuscripts, PM Modi pitches a self-reliant India

The Indian EXPRESS

Mann Ki Baat: Modi 'grateful to every citizen' for supporting austerity call

Nagaland TRIBUNE

PM Modi praises Nagaland's grassroots football initiatives in Mann Ki Baat

NDTV

Assam's 'Hargila Army' Gets Praise From PM Modi In Mann Ki Baat

News18 اردو

من کی بات میں پی ایم مودی کا دفاع،یوگا اور خود کفیل بھارت پر زور

The New Indian Express

PM Modi hails Nalanda University's revival of ancient Śāstrārtha tradition

ThePrint

मन की बात: प्रधानमंत्री मोदी ने आत्मनिर्भरता की दिशा में देश की उपलब्धियों की सराहना की

the quint

PM Modi Highlights Security, Self-Reliance In Mann Ki Baat

THE TIMES OF INDIA

PM shines light on Assam biologist's conservation efforts in 'Mann Ki Baat'

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं! हमें इस ईमेल एड्रेस पर लिखें : mkb-mib@gov.in

आज समुद्र से लेकर आकाश तक हमारा भारत अधिक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बन रहा है।

-माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार